राम

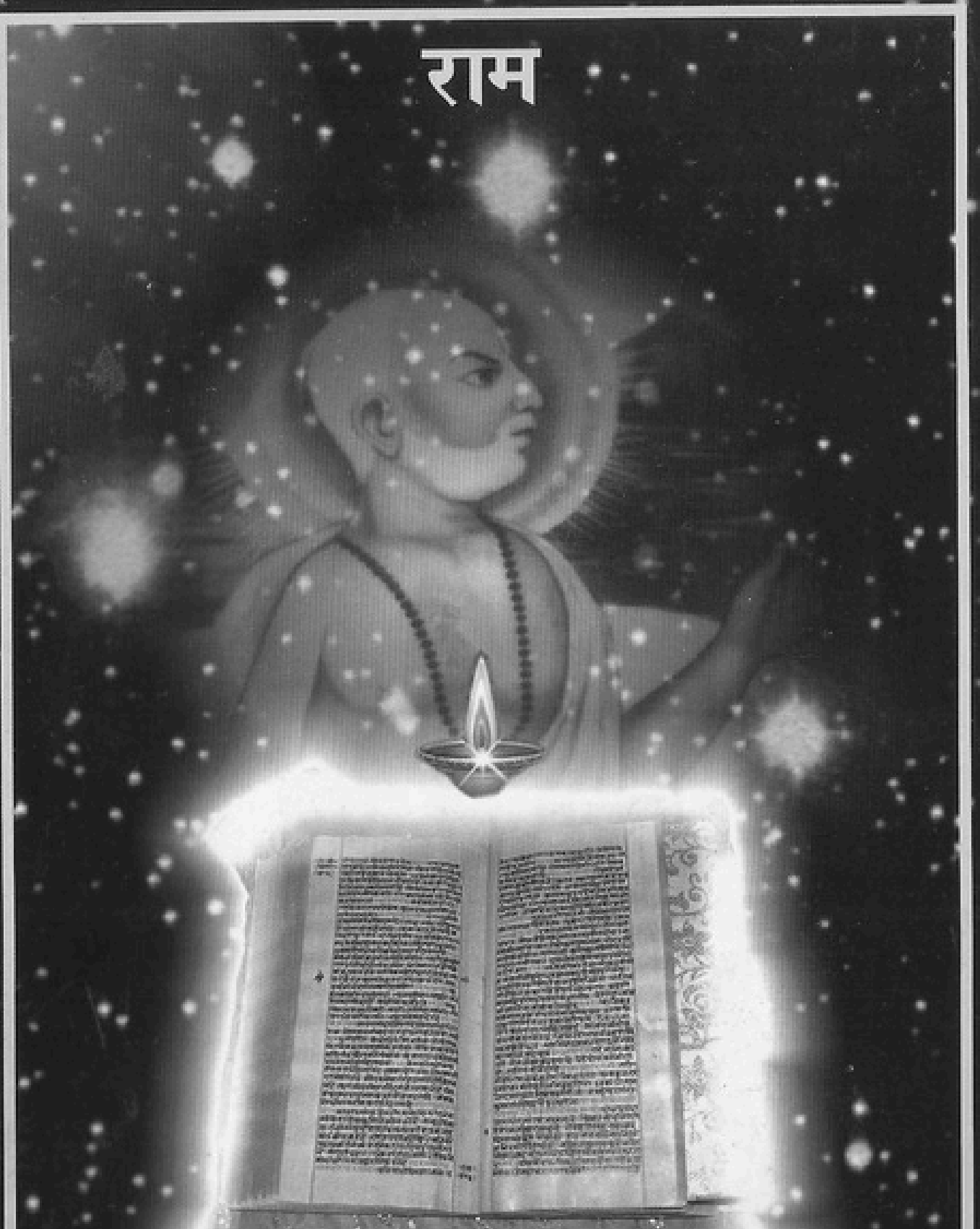

श्री रामस्नेही दर्शनांक

अन्तर्राष्ट्रीय श्री रामस्नेही सम्प्रदाय का प्रमुख मासिक "श्री रामस्नेही भास्कर"

आशीर्वचन

दर्शन साध स्वरूप को, राम नाम उर धार।
रामचरण अक्षर उभै, भजे सो उतरे पार।।

वेद, पुराण, उपनिषद्, गीता, भागवत्, रामायण तथा अनन्त पुरुषों की दिव्यातिदिव्य अनुभववाणी की पुण्य सलिला का, भारत जैसी वसुन्धरा को सनातन काल से ही दृष्टि, दृश्य, दृष्टा एवं दर्शन का, चिंतनात्मक अध्यात्म प्रसाद प्राप्त होता रहा है। भारतीय वैदिक संस्कृति सदैव दर्शनवाद की उपासक रही है। जीव जीवन का सुप्रभात परमात्मा के मंगलादर्शन से ही शुभारम्भ होता है।

संस्कृति के सुसंस्कारों की सुबह, कर दर्शन, सूर्य दर्शन, देवदर्शन, गुरु एवं संत दर्शन से होती है। वेद भगवान कहते है :–

न वि जानामि यदि वेदमस्मि, निण्य:संनद्धो मनसा चरामि।
यदा भागन प्रथमजाऋतस्याद् इद्वाचो अश्नुवे भागमस्या:।।

रामस्नेही सम्प्रदाय में भी गुरु दर्शन, वाणी दर्शन एवं धाम तथा रामद्वारा दर्शन की परम्परा रही है। और इन सबसे सर्वोपरि आत्म दर्शन रहा है।

निज स्वरूप निरखे नहीं, जब लग राम पुकार।
रामचरण घर क्यों लहै, जो पथ में बैठे हार।।

''श्री रामस्नेही दर्शन'' के दिव्यातिदिव्य प्रकाशन से, श्री महाराज के प्राकट्य से निर्वाण पर्यन्त स्थलों, तीर्थभूमि एवं चमत्कारिक स्थलों के दर्शनीय दर्शन जन–जन को सुलभ हो सकेंगे। इस भागीरथी के दर्शन, स्नान का अलभ्य लाभ सबको चिर चित्त सुख प्रदान कर सकेगा साथ ही महापुरुषों का दिव्य शब्द दर्शन सभी को कृतार्थ करेगा।

शुभचिन्तक

।।श्रीमद् रामचरणाय नम:।। ।।श्रीमद् रामदयालाय नम:।।

रमतीत राम गुरुदेव जी, पुनि तिहुं काल के संत।
जिनकूं रामचरण की, वन्दन बार अनन्त।।

डाक पंजीयन संख्या RJ/SR/12-13/2003-05 आर.एन.आई. सं.–56167/92

श्री रामस्नेही भास्कर मासिक पत्रिका

(संस्थापक–ब्रह्मलीन आचार्य श्री रामकिशोर जी महाराज)

वर्ष–14 मार्च–अप्रेल–2005 अंक : 2–3

संचालक व दिशा निर्देशक
जगद्गुरु स्वामीजी श्री रामदयाल जी महाराज
आचार्य श्री अन्तर्राष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय,
शाहपुरा (भीलवाड़ा) राज.

प्रकाशक
श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट
शाहपुरा (भीलवाड़ा) राज.

सम्पादक
डॉ. केशव पथिक

प्रबन्ध सम्पादक
विजय त्रिपाठी

–: भास्कर का शुल्क :–

संरक्षक	आजीवन	वार्षिक	विशेषाङ्क
5001/–	501/–	151/–	21/–

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

दो टीपी बात

भारत ही एक मात्र ऐसा देश है, जहाँ अनेकता में एकता की मिसाल सदियों से चली आ रही है। वर्ण व्यवस्था के उपरान्त भी यहाँ सम्प्रदायिक सद्भावना का अलख जगाने का काम विभिन्न सम्प्रदायों के सन्त करते रहे है। सच्चा जन हितैषी सम्प्रदाय वही है जो प्राणियों के प्रति भाईचारे का व्यवहार करें, दु:खी दर्दियों के संताप को मिटाये तथा मानव को मानव से जोड़ने का काम करें। हिंसा के बल पर चलने वाले सम्प्रदाय लम्बे समय तक टिक नहीं सकते।

स्वामीजी श्री रामचरण जी महाराज ने रामस्नेही सम्प्रदाय की स्थापना कर असंख्य जीवों का उद्धार किया। स्वामीजी ने अपनी वाणी की शक्ति से हर जाति समाज को रामस्नेही सम्प्रदाय से जोड़ा। निर्गुण भक्ति का यह सम्प्रदाय आज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर की श्रेणी में पहुंच गया है। स्वामीजी का कथन है–राम परब्रह्म है और वह प्राणियों का पिता है और माता भी है, उसी के नाम का स्मरण करने से मोक्ष की प्राप्ति होती है।

स्वामीजी ने राम नाम स्मरण के प्रताप को अपनी वाणी से जग जाहिर कर दिया और कहा–जिन्होनें भी राम के नाम का स्मरण किया उनका उद्धार हो गया तथा जिन्होनें राम के नाम को बिसरा दिया वह जम के द्वार अर्थात् नर्क में पहुंच गया।

जिन जिन सुमर्‌या नाम कूं, सो सब उतर्‌या पार।
रामचरण जो बीसर्‌या, सो ही जम के द्वार।।

''रामस्नेही'' वह है जो राम से स्नेह करे और राम भी उससे स्नेह करें, इसी दर्शन से रामस्नेही सम्प्रदाय, शाहपुरा (भीलवाड़ा) एक वटवृक्ष बन अपने अनुयायियों के ताप को मिटाकर शीतल छाया दे रहा है।

हम ''रामस्नेही दर्शन'' पर आधारित यह प्रकाशन प्रकाशित कर रहे है। आशा है पाठक इससे लाभान्वित होंगे।

स्वामीजी के इस सन्देश को जीवन में स्थान दें कि राम नाम से इतना प्रगाढ़ व अनन्य प्रेम हो कि शरीर छूट जाने पर भी वह प्रेम कम न हों–

राम नाम सूं प्रीति कर, तन मन सूंज समेत।
प्राण गया छूटै नहीं, ज्यौं बेलि वृक्ष को हेत।।

डॉ. केशव पथिक

।।श्रीमद् रामचरणाय नम:।। ।।श्रीमद् रामदयालाय नम:।।

रमतीत राम गुरुदेव जी, पुनि तिहुं काल के संत।
जिनकूं रामचरण की, वन्दन बार अनन्त।।

श्री रामस्नेही दर्शन

संचालक व दिशा निर्देशक
जगद्गुरू स्वामीजी श्री रामदयाल जी महाराज
आचार्य श्री अन्तर्राष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय,
शाहपुरा (भीलवाड़ा) राज.

प्रकाशक
श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट
शाहपुरा (भीलवाड़ा) राज.

परामर्श
संत श्री गुरुमुख रामस्नेही
संत श्री रामस्वरूप शास्त्री
श्री सूर्यप्रकाश बिड़ला

सम्पादक
डॉ. केशव पथिक

प्रबन्ध सम्पादक
विजय त्रिपाठी

फाल्गुन शुक्ला पूर्णिमा
संवत् 2061, दिनांक 25 मार्च 05

निछरावल – 20/–

मुद्रक
सिद्धार्थ ऑफसेट प्रिन्टर्स
कोठी रोड़, शाहपुरा. फोन–(01484) 223264

स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु

भारत की पावन वसुन्धरा ने समय समय पर राष्ट्र के अलंकार रत्नों को आविर्भूत किया है। इसी अविस्मरणीय शृंखला में रामस्नेही सम्प्रदाय के जन्मदाता युगदृष्टा तपःपूत ब्रह्मनिष्ठ स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु का प्राकट्य माघ शुक्ला चतुदर्शी शनिवार वि.सं. 1776 को सोड़ा ग्राम (जिला टोंक) में हुआ।

पिता श्री बखतराम जी एवं माता देऊजी ने ऐसी विभूति को प्रकाश स्तम्भ के रूप में प्रगट कर सम्पूर्ण संसार में अध्यात्म का अखण्ड आलोक फैलाया। वि.सं. 1808 (सन् 1752) भादवा शुक्ला अष्टमी गुरूवार को ब्रह्म अर्शपर्श सतगुरू स्वामी श्री कृपारामजी महाराज के कृपापात्र बनकर गुरू दीक्षा से धन्य हो गये। वि.सं. 1817 (सन् 1761) में रामस्नेही सम्प्रदाय की गहरी नींव भीलवाड़ा की पावन धरती पर डाली।

बारह वर्ष की प्रबलतम साधना के फलस्वरूप वि.सं. 1820में आपके श्री मुख से ज्ञान भक्ति वैराग्य रूपी त्रिपथगा पूज्य अणभैवाणी मुखरित हुई। 36397 छन्दों वाली वाणी जी, महाप्रभु का वांग्मय स्वरूप, आज जन–जन के हृदय में निवास कर रही है।

भगवान शंकर द्वारा दस हजार वर्ष पूर्व की गई भविष्यवाणी ''यहाँ राम भक्त वीतराग महापुरूष तपस्या करेंगे। जिससे यह स्थान देश–विदेश में तीर्थ स्थली के रूप में विख्यात होगा और अनेकानेक नर–नारी राम नाम के प्रभाव से तिरेंगे।'' को पूर्ण करने हेतु स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु शाहपुरा नरेश रणसिंह जी की अरजी पर वि.सं. 1826 में शाहपुरा पधारे। राजा के द्वारा महलों में पधारने की अरजी को अस्वीकारते हुए निर्जन स्थल में अपना आसन लगाया।

ज्ञान भक्ति वैराग्य की गंगा बहाते, असंख्यों भक्तों का उद्धार करते, अनेकानेक अविश्वसनीय चमत्कारों से जन जन को कृतार्थ करते हुए, ''राम'' की उपासना का सीधा, सरल, सुगम मार्ग बता आप वैशाख कृष्णा 5 गुरूवार वि.सं. 1855 को ब्रह्मलीन हो गए।

ब्रह्मलीन आचार्य स्वामीजी श्री 1008 श्री

रामकिशोर जी महाराज

ब्रह्मलीन स्वामीजी श्री रामकिशोर जी महाराज

222246

आपका जन्म पाली (मारवाड़) के ढाबर ग्राम में चैत्र शुक्ला 5 शनिवार वि.सं. 1976 को राजपुरोहित (ब्राह्मण) वंश में हुआ। बाल्यावस्था से ही आप बहुत होनहार थे। पण्डित साध श्री कारजराम जी महाराज का सानिध्य आपको प्राप्त हुआ। फाल्गुन सुद 11 संवत् 1983 को आपने दीक्षा ग्रहण की। गुरु शरण में अणभैवाणी, श्रीमद् भागवत् एवं सभी धर्म ग्रन्थों का आपने गहन अध्ययन किया। चैत्र शुक्ला 8 सं. 2016 को आप गादी पदासीन हुए। 2016 से 2029 तक पूरे राष्ट्र में पैदल भ्रमण किया। आपने दो बार विदेश यात्राएं की, इनमें आप थाईलैण्ड, मलेशिया, इण्डोनेशिया, सिंगापुर, आस्ट्रेलिया, फीजी, फ्रांस, अमेरिका, इंग्लैण्ड आदि राष्ट्रों में पधारें तथा रामस्नेही धर्म का प्रचार किया।

उज्जैन, हरिद्वार एवं प्रयागराज के कुम्भ मेलों में विशाल शिविर लगाये। रामस्नेही सम्प्रदाय की चारों पीठ के आचार्यो का सम्मेलन भी आपके तत्वाधान में हुआ। सर्वधर्म समन्वय के प्रचारक आचार्य श्री का सभी धर्माचार्यो एवं शंकराचार्यो से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा।

आपने तीर्थराज पुष्कर में विशाल रामद्वारे का निर्माण कराया। शाहपुरा एवं भीलवाड़ा में भी अनेक निर्माण कार्य आपके समय में हुए। श्री रामस्नेही भास्कर एवं श्री रामस्नेही प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय के जनक भी आप रहे। आप भागवत के प्रकाण्ड पण्डित थे। आपने पूरे भारत वर्ष में अनेको भागवत सप्ताह कर जन जन को कृतार्थ किया।

आप उदारमना, दूरदर्शी एवं अत्यन्त मिलनसार थे। लोकोपयोगी एवं जनहित के काम करने की प्रबल भावनायें आपमें निहित थी। 8 जनवरी 1994 को गुजरात के पादरा नगर में आप ब्रह्मलीन हुए। आपका नाम सम्प्रदाय के चहुंमुखी एवं चतुर्दिक विकास के प्रणेता के रूप में लिया जाता रहेगा। आपकी समाधि शांति स्थल आज भी अमन शांति प्रेम–सौहार्द का सन्देश फैला रही है।

स्वामीजी श्री रामदयाल जी महाराज

आपका जन्म आश्विन कृष्णा पंचमी मंगलवार सं. 2013 दिनांक 26.9.56 को इन्दौर में हुआ। 17 वर्ष की अल्पायु में आपने भजनानन्दी साध श्री भगतरामजी, चित्तौड़गढ़ से फाल्गुन बुदी 14, संवत् 2030 महाशिव रात्रि को दीक्षा ली। पूज्य गुरूदेव के ज्ञान भक्ति वैराग्यमय सानिध्य में आपने ज्ञानार्जन किया।

सम्प्रदाय के तेरहवें आचार्य स्वामीजी श्री 1008 श्री रामकिशोर जी महाराज, जिन्होनें 35 वर्ष तक गादी पर विराजकर सम्प्रदाय का चहुँमुखी विकास किया एवं सम्प्रदाय को अन्तर्राष्ट्रीय रूप प्रदान किया, के 8 जनवरी 1994 को ब्रह्मलीन होने पर 20 जनवरी 1994 को आप सम्प्रदाय के चौदहवें आचार्य के रूप में गादी पर विराजे। आपके कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में सम्प्रदाय का सर्वतोमुखी विकास अत्यन्त तीव्र गति से हो रहा है। अनेक प्रेरक एवं ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न हुए।

स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु, श्री मुरलीरामजी महाराज एवं श्री भगवानदास जी महाराज के निर्वाण द्विशताब्दी समारोह; हरिद्वार, इलाहबाद, उज्जैन में महाकुम्भ शिविरों का विराट आयोजन। इलाहबाद महाकुम्भ में पूज्य आचार्य श्री को जगद्गुरू की उपाधि से विभूषित किया गया। पूज्य आचार्य श्री श्रीमद् भागवत् के मर्मज्ञ है। देश के कोने– कोने में अपनी अमृतमयी वाणी द्वारा श्रीमद् भागवत कथामृत का पान करा असंख्य आत्माओं का उद्धार किया है।

रूग्ण मानवता की सेवार्थ आपने श्री रामस्नेही चिकित्सालय भीलवाड़ा का निर्माण कराया। आप द्वारा अनेक सेवा प्रकल्प भी चलाये जा रहे है– रक्तदान, गौ शिविर, निःशुल्क नैत्र चिकित्सा शिविर, निःशुल्क चिकित्सा, परामर्श एवं निदान शिविर, छात्रवृत्ति, निर्धन सेवा, अन्नक्षेत्र आदि। आपके अल्पकालीन आचार्यत्व काल में भव्य निर्माण भी हुए है।

निरन्तर चिन्तन, मनन, श्रम एवं भ्रमणशील पूज्य आचार्य श्री धर्म, राष्ट्र एवं मानवता के लिए पूर्णतः समर्पित है। राम

रामद्वारा सोडा

सोड़ा स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु का ननिहाल था। माघ सुदी 14 वि.सं. 1776 शनिवार को माता देऊबाई की कोख से महाप्रभु का प्राकट्य सोड़ा ग्राम में हुआ। वि.सं. 2008 में सम्प्रदाय के 11 वें आचार्य स्वामीजी श्री निर्भयराम जी महाराज का चातुर्मास हुआ। उस समय प्राकट्य स्थल पर संगमरमर का फर्श एवं छतरी बनवाई गई। 13वें आचार्य स्वामीजी श्री रामकिशोर जी महाराज के समय भी रामद्वारे का जीर्णाद्धार करवाया गया। यहां प्रतिवर्ष जयन्ती उत्सव मनाया जाता है। माघ शुक्ला 13 को जागरण एवं 14 को स्वामीजी महाराज की वाणी जी का जुलूस निकाला जाता है। पूरे वर्ष दूर दूर से भक्तजन दर्शनार्थ यहाँ आते है।

स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु का प्राकट्य स्थल सोड़ा ग्राम मालपुरा से 25 कि.मी. एवं डिग्गी कल्याण जी से 10 कि.मी. तथा जयपुर से 80 किमी की दूरी पर स्थित है।

स्तुति

रमतीत राम गुरुदेवजी, पुनि तिहुं काल के संत।
जिनकूं रामचरण की वन्दन बार अनन्त।।

नमो राम रमतीत नमो गुरुदेव स्वामी।
नमो नमो सब संत नाम रटि भये जुनामी।।
जिनके चरणों हेटि रहो नित शीश हमारा।
तन मन धन अरु प्राण करुं नवछावर सारा।।
राम सन्त गुरुदेव बिन, नहीं ओर आधार।
रामचरण कर जोरि कै, बन्दे बारम्बार।।

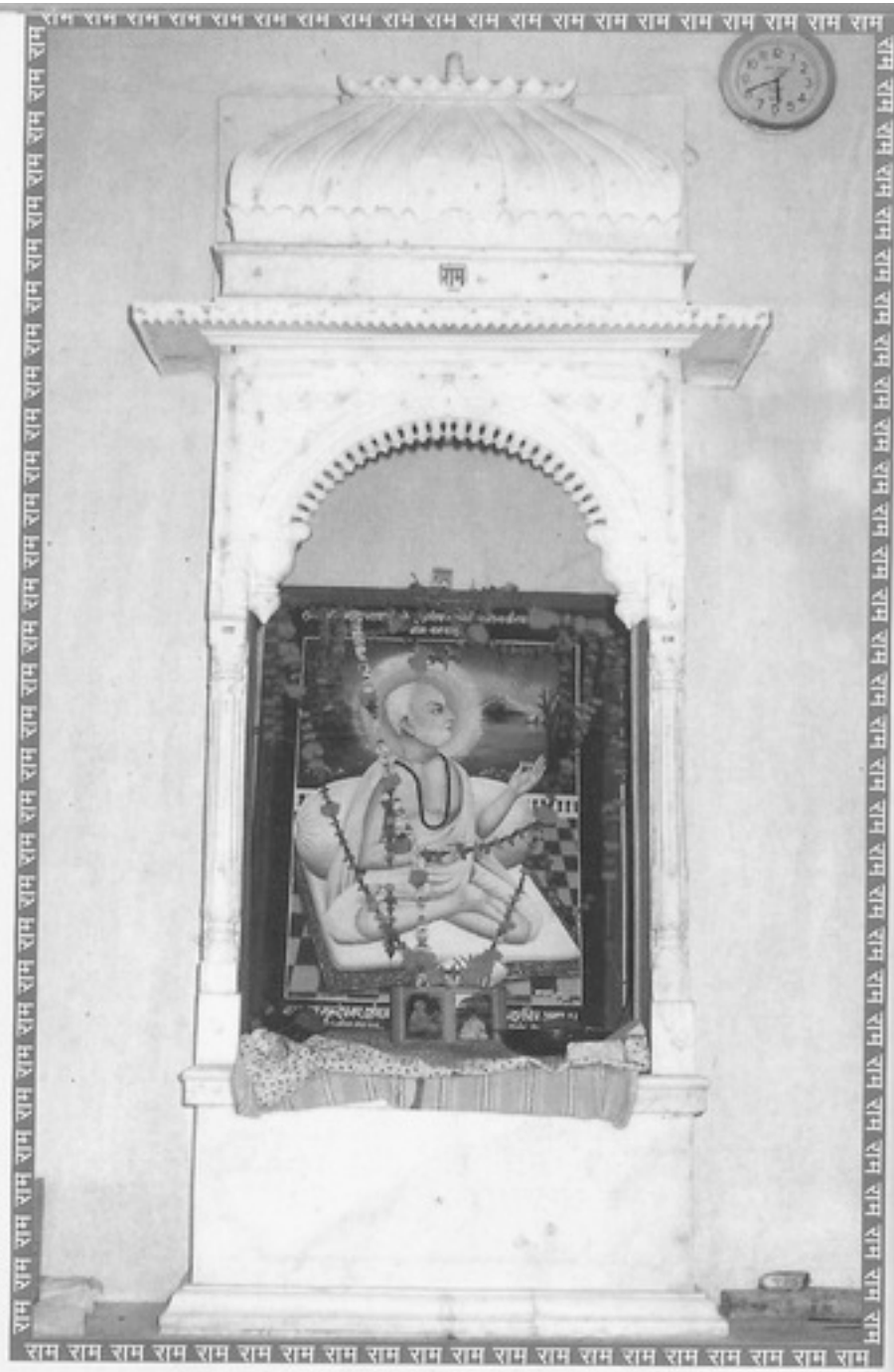

बनवाड़ा

श्री महाराज का पैतृक निवास सोड़ा से लगभग 30 किमी पूर्व में बनवाड़ा ग्राम में स्थित है। आपके पिता श्री बख्तराम जी कापड़ी (विजयवर्गीय) गांव के सम्पन्न व्यक्ति थे। महाप्रभु का बचपन, शिक्षा एवं विवाह बनवाड़ा में ही सम्पन्न हुआ। बनवाड़ा में श्री महाराज द्वारा नीम की डाली से दातुन करके वहीं गाड़ देने पर वही डाली नीम का विशाल वृक्ष बन गई। कालान्तर में नीम का वृक्ष गिर गया तो भक्त जनों ने वहीं एक कच्चा चबूतरा बनवाकर पूजन वन्दन आरम्भ किया। महाप्रभु की कृपा एवं जन सहयोग से वि.स. 2024 में संत विनतीरामजी ने रामद्वारा भवन की नींव लगवाकर कार्य आरम्भ किया। इस रामद्वारा भवन में छोटे बड़े आठ कमरे तथा एक बड़ा हॉल एवं बरामदा है। चबूतरे के स्थान पर संगमरमर की चंवरी (छतरी) बनी हुई है। जिसमें श्री महाराज का सुन्दर स्वरूप विराजमान है। रामद्वारा में प्रतिवर्ष जयन्ती महोत्सव पर जागरण माघ शुक्ला 14 को होता है एवं पूर्णिमा को प्रातः श्री वाणीजी की शोभा यात्रा निकाली जाती है। वर्तमान में यहां पर एक विद्यालय चल रहा है।

गुरुदेव

स्वामी जी श्री संतदास, जिनके किरपा राम।
रामचरण तांकी शरण, सरया मनोरथ काम।।

रामचरण का शीश पर स्वामी किरपा राम।
जिनका हित परताप सूं, मन पाया विश्राम।।

महाप्रभु की तपस्या स्थली

महाप्रभु के प्रथम शिष्यगण

मयाचन्द जी की बावड़ी

विक्रम संवत् 1817 में स्वामी रामचरण महाप्रभु भ्रमण करते हुए भीलवाड़ा पधारें। नगर के बाहर स्थित मयाचंद जी की बावड़ी को भजन के लिए उपयुक्त स्थान समझकर आपने यहां भजन आरम्भ किया। यहीं वो स्थान है जहाँ सर्वप्रथम श्री देवकरण जी तोषनीवाल ने महाप्रभु के दर्शन कर उनकी शिष्यता अपने मित्रों श्री कुशलरामजी बिड़ला एवं श्री नवलरामजी मंत्री सहित स्वीकार की। कालान्तर में इसी बावड़ी पर संत सीतारामदास जी ने भी भजन किया एवं महाप्रभु की तपस्या तथा सीतारामजी की प्रेरणा से इस कराल कलिकाल में यहां पर ''हरे राम हरे राम राम राम हरे हरे, हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे'' महामंत्र का अखण्ड कीर्तन विगत कई वर्षों से निरन्तर चला आ रहा है।

सुमिरन

राम गरीब निवाज का, बिड़द गरीब निवाज।
दीन होय सुमरन करे, जाका सरि हे काज।।
जाका सरि हे काज, काल का झगड़ा छूटै।
राम नाम लिव लाय, भरम का भांडा फूटै।।
रामचरण यह राम नाम, जग में बड़ी जहाज।
राम गरीब निवाज का, बिड़द गरीब निवाज।।

भजन बिना छूटै नहीं, रामचरण भव पासि।
जे चाहवे दीदार कूं, तो रटिये सास उसास।।

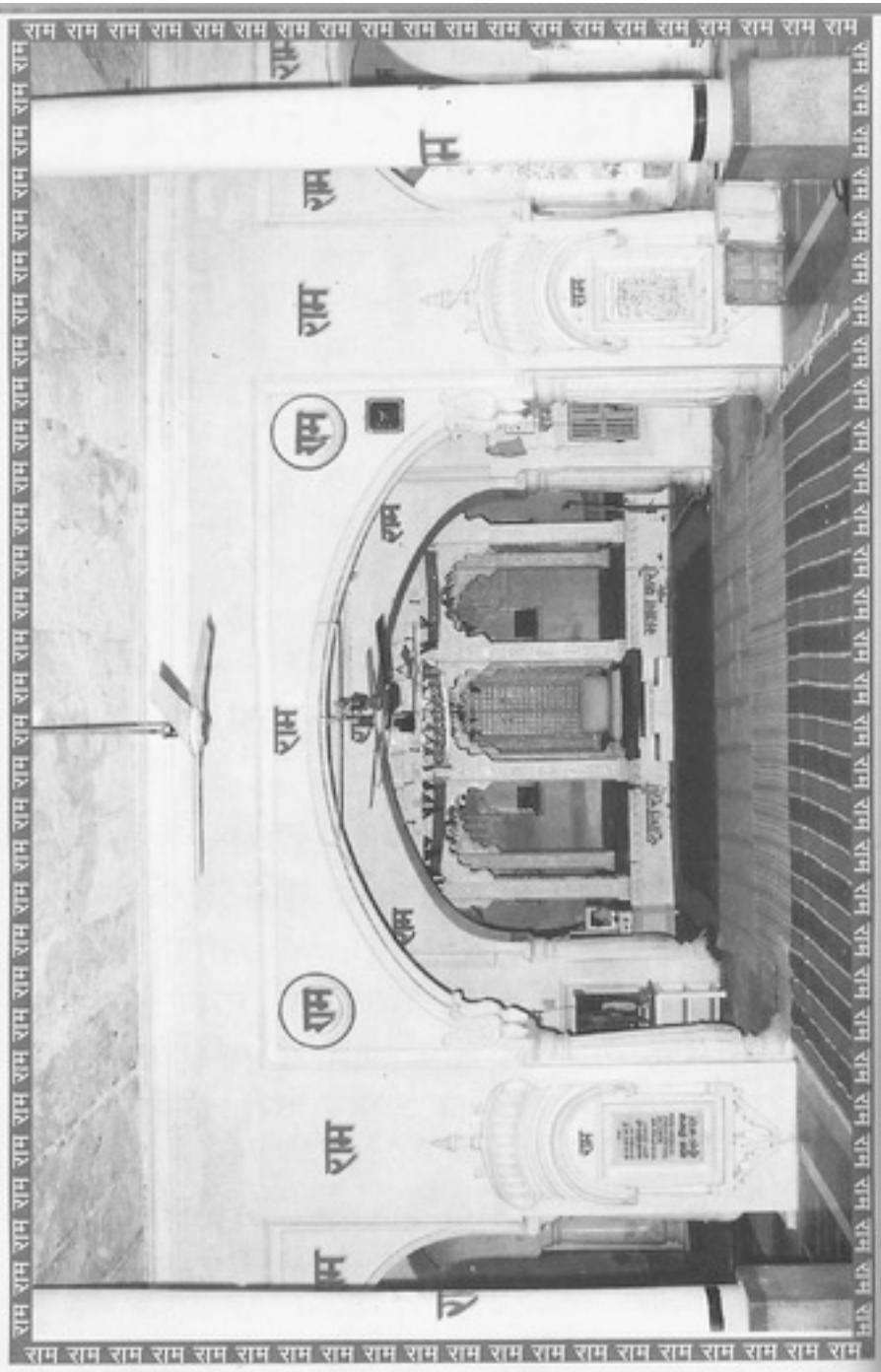

भीलवाड़ा रामद्वारा

मयाचंद जी की बावड़ी पर वि.सं. 1820 में श्री महाराज की वाणी का उद्गम हुआ। अनेकानेक भक्तजन आने लगे, तब विक्रम संवत् 1822 में 12 बीघा जमीन सभी रामस्नेहियों ने मिलकर मोल ली। श्री देवकरण जी तोषनीवाल ने रामद्वारे का निर्माण करवाया। इसमें रामद्वारा, रामद्वारे के चारों ओर का परकोटा एवं दक्षिण में एक विशाल बांवड़ी का निर्माण करवाया। इस रामद्वारे के उद्घाटन का खर्च श्री नवलरामजी मंत्री ने किया। रामद्वारा में मुख्य दर्शनीय स्थल बारहदरी में उत्तरदिशा में श्री महाराज के विराजने का आसन (चबूतरी), दक्षिण में जल भण्डार एवं ऊपर श्री महाराज एवं आचार्यो का निवास है। बारहदरी के सामने (सभा मण्डप) सुख सदन का निर्माण स्वामीजी श्री जगरामदास जी महाराज के द्वारा करवाया गया एवं उससे आगे के सभा मण्डप का निर्माण स्वामीजी श्री रामकिशोर जी महाराज के समय करवाया गया। इसके आगे तीन समाधियों एवं एक जल भण्डार का निर्माण उदयपुर महाराणा स्वरूपसिंह जी के द्वारा करवाया गया। धानमण्डी में राम मेड़िया स्थित है। जहाँ पर प्रतिवर्ष फूलडोल का जागरण होता है।

नगर भिलाड़े प्रगटया, रामचरण जी संत।
ग्यान भक्ति बैराग को अडिग चलायो मंत।।
अडिग चलायो मंत, संत सुरति सबको मारग।
सील दया संतोष भजन भौसागर त्यारग।
मुरली भाखी देख के परा परी निज पंथ।
नगर भिलाड़े प्रगट्या, रामचरण जी संत।।

कुहाड़ा धाम

भीलवाड़ा से 5 किमी उत्तर दिशा में कोठारी नदी के तीर पर स्थित कुंहाड़ा ग्राम के बाहर सिद्ध शिला स्थित है। स्वामी रामचरण महाप्रभु वि.सं. 1824 में यहां पधारे। नदी का एकान्त तट, सघन वटवृक्ष और स्वच्छ शिला, महाप्रभु ने इसी पर विराजकर भजन किया। भीलवाड़ा से अनेक शिष्य महाप्रभु के दर्शन करने प्रतिदिन यहाँ आते थे। आज भी अनेकानेक भक्तजन इस सिद्ध शिला के दर्शन कर अपने जीवन को धन्य बनाते है एवं मनोवांछित फल की प्राप्ति करते है।

एक बार वर्षा ऋतु में अतिवृष्टि से कोठारी नदी मे इतना अधिक जल आया कि सिद्ध शिला जहाँ महाप्रभु भजन में लीन थे, के ऊपर तक पहुंच गया श्री महाराज ध्यानावस्था में थे, वे भी जलमग्न हो गये। लगभग सात दिवस तक यही स्थिति बनी रही पर महाप्रभु की हांडी जल पर तैरती रही। शिष्यगणों एवं भक्त लोगों ने सात दिन तक भोजन नहीं किया। जल उतरने पर आंठवे दिन श्री महाराज के दर्शन कर भोजन किया। शिष्यों की अटूट श्रद्धा देखकर श्री महाराज ने फरमाया कि मेरी अनुपस्थिति में हांडी, वाणी की पुस्तक एवं स्थान के दर्शन करके ही भोजन कर लिया करो।

''गैबी चले तो कुहाड़े जाईये। ओर दिशा कूं गमन न कीजे। सुरति सहज घर लाईये।'' श्री महाराज का प्रसिद्ध भजन है।

वर्तमान में यहां पर एक सुन्दर उद्यान लगाया जा रहा है। साथ ही यहां वृद्धाश्रम, पक्षी चिकित्सालय, महाविद्यालय आदि प्रारम्भ करने की योजना है।

कुहाड़गढ़ कोठारेश्वरी, पदमशिला का सीन।
तहँ श्री स्वामी रामचरण जी, राम भजन में लीन।।

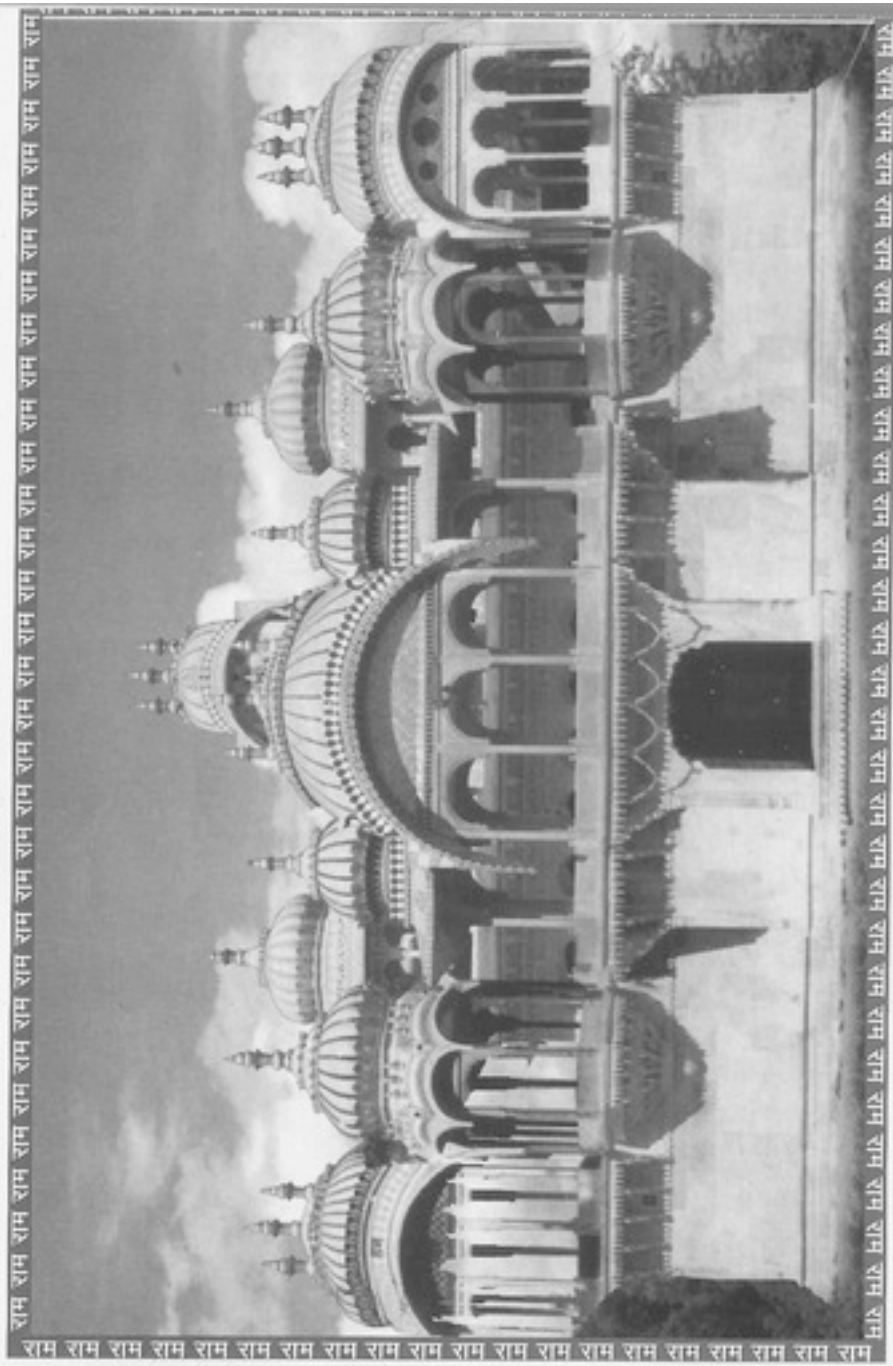

श्री रामनिवास धाम

''रामनिवास धाम'' नाम से ही यह परिलक्षित होता है कि जहाँ राम का निवास है, वो धाम, वह स्थान। यह अनुभूति तन, मन एवं आत्मा को आल्हादित कर देती है। वस्तुतः अन्तर्राष्ट्रीय रामस्नेही सम्प्रदाय शाहपुरा का प्रमुख पीठ स्थल अपने आपमें अनूठा एवं बेजोड़ ।स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु की तपस्या के फलस्वरूप चारों ओर फैला शांत, आध्यात्मिक, राममय वातावरण व्यक्ति को इस आपाधापी वाली दुनिया से कहीं ओर ही ले जाता है।

सम्वत् 1826 में श्री महाराज के शाहपुरा पधारने के पश्चात् से ही यह स्थल जन जन की आस्था का केन्द्र बन गया। वि.सं. 1855 में श्री महाराज के ब्रह्मलीन होने पर उनकी समाधि के रूप में चार मंजिला श्री रामनिवास बैकुण्ठ धाम धरा पर बैकुण्ठ सदृश्य ही है। यहां की स्थापत्य कला अद्‌भुत है।यहाँ वर्ष पर्यन्त सत्संग की गंगा प्रवाहित रहती है।

पूज्य स्तम्भ जी, बारहदरी, अनेक दर्शनीय एवं पूजनीय स्थल इस परिसर में है। यात्रियों की सुविधार्थ यहाँ लगभग 100 कमरें एवं 5 हॉल पूर्ण सुविधाओं से युक्त बने है। पूरे वर्ष यहां लाखों दर्शनार्थी अपने श्रृद्धा सुमन चढ़ाने आते है।

श्री रामनिवास धाम शाहपुरा–भीलवाड़ा, देवली, केकड़ी एवं बिजयनगर से लगभग 50 किमी. क्रमशः उत्तर, पश्चिम, दक्षिण एवं पूर्व दिशा में स्थित है। निकटस्थ रेल्वे स्टेशन भीलवाड़ा एवं बिजयनगर है। निकटस्थ हवाई अड्डा उदयपुर (220 किमी) एवं जयपुर (185 किमी) है।

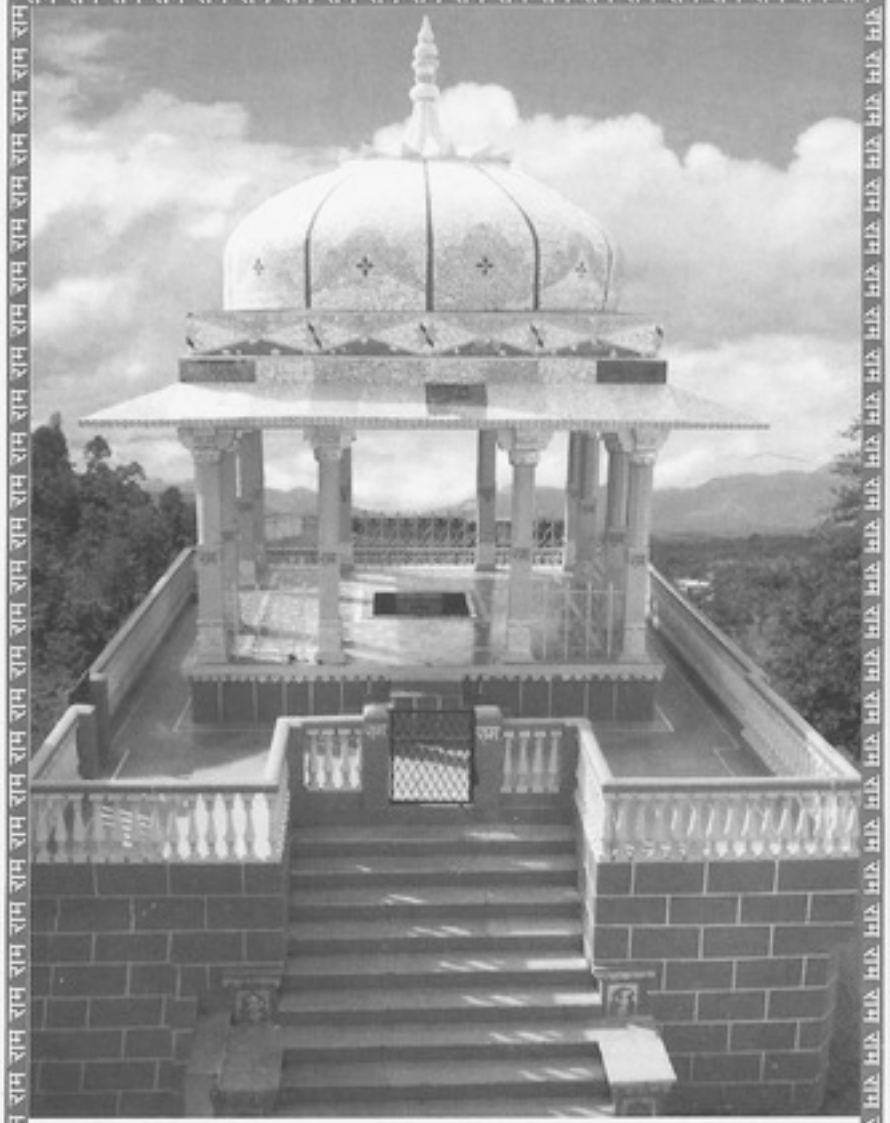

भारत सिंह जी की छतरी

महाप्रभु की तपो:स्थली

भारत सिंह जी की छतरी

वि.सं. 1826 में शाहपुरा नरेश राजा रणसिंहजी के नम्र निवेदन पर स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु शाहपुरा पधारे। पूरा नगर महाप्रभु के दर्शनार्थ पलक पांवड़े बिछाकर खड़ा था। राजाजी ने आपके लिये महलों में ठहरने का प्रबन्ध किया। महाप्रभु ने उनके आग्रह को अस्वीकारते हुए शाहपुरा नगर के दक्षिण में राजाओं के श्मशान में स्थित राजा भारत सिंह जी की छतरी को अपने भजन हेतु उत्तम मानकर अपना आसन वहीं लगाया। महाप्रभु के साथ उस समय 16 शिष्य थे। श्री महाराज 18 चातुर्मास यहां बिराजे। सम्वत् 1831 तक फूलडोल उत्सव भी यहीं पर होता था। वर्षा, सर्दी आदि से बचने के लिए छतरी के चारों ओर कड़प की टाटियाँ बांध दी जाती थी।

भजन

राम नाम मुख गाय, और सब तजे उपाधि।
चित की चितवन जाय, लगे तब सहज समाधि।।
शुभ अशुभ जाय ऊठि, काय की किरया भूले।
रामचरण रस पिये सुख मई सर में झूले।।
उदय अस्त की गम नही, ब्रह्मानन्द गलतान।
आतम मिल परमात्मा तकि यह सहनान।।

विपत्ति निवारण सुख करण, उदय ज्ञान प्रकाश।
रामचरण भज राम कूं, सरण हरण जम त्रास।।

आसन की छतरी

(राजा रणसिंहजी की छतरी)

वि.सं. 1831 में राजा रणसिंह जी का देहावसान हो जाने पर एक विशाल छतरी का निर्माण करवाया गया। जिज्ञासी जनों की बढ़ती संख्या एवं शिष्यों की वृद्धि के कारण महाप्रभु का आसन उक्त छतरी में किया गया। वर्तमान में भी यहां चबूतरी बनी हुई है। यहाँ पर महाप्रभु वि.सं. 1847 तक विराजे। स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु के ब्रह्मलीन होने के पश्चात् प्रथम आचार्य स्वामीजी श्री रामजन्न जी वीतराग महाराज की गादी नशीनी यहीं हुई। उसके पश्चात सम्प्रदाय एवं संत समाज से सम्बन्धित न्यायिक प्रक्रिया यहीं पर सम्पन्न की जाती है। फलस्वरूप इसे न्याय मंदिर भी कहा जाता है। यहीं पर नवीन आचार्य श्री को सम्पूर्ण अधिकार प्रदान किये जाते है।

गुरुदेव

राम नाम सम तत्व और कहूं दीसे नाही।
श्रुति स्मृति कूं जोय खोजिया संतन मांही।।
सब ग्रन्थन का सार सोधि सतगुरु मोही दीन्हा।
दलिद्र दूर निवार, रंक धनवन्त कर लीन्हा।
बड़ दानी कृपाल की, मुख महिमा कहां भाखिये।
रामचरण मन अर्पिके, सतगुरू चरणा राखिये।।

रामचरण सतगुरु मिल्या किया भर्म सब दूर।
जित देखूं, तित राम है, रह्या सकल भरपूर।।

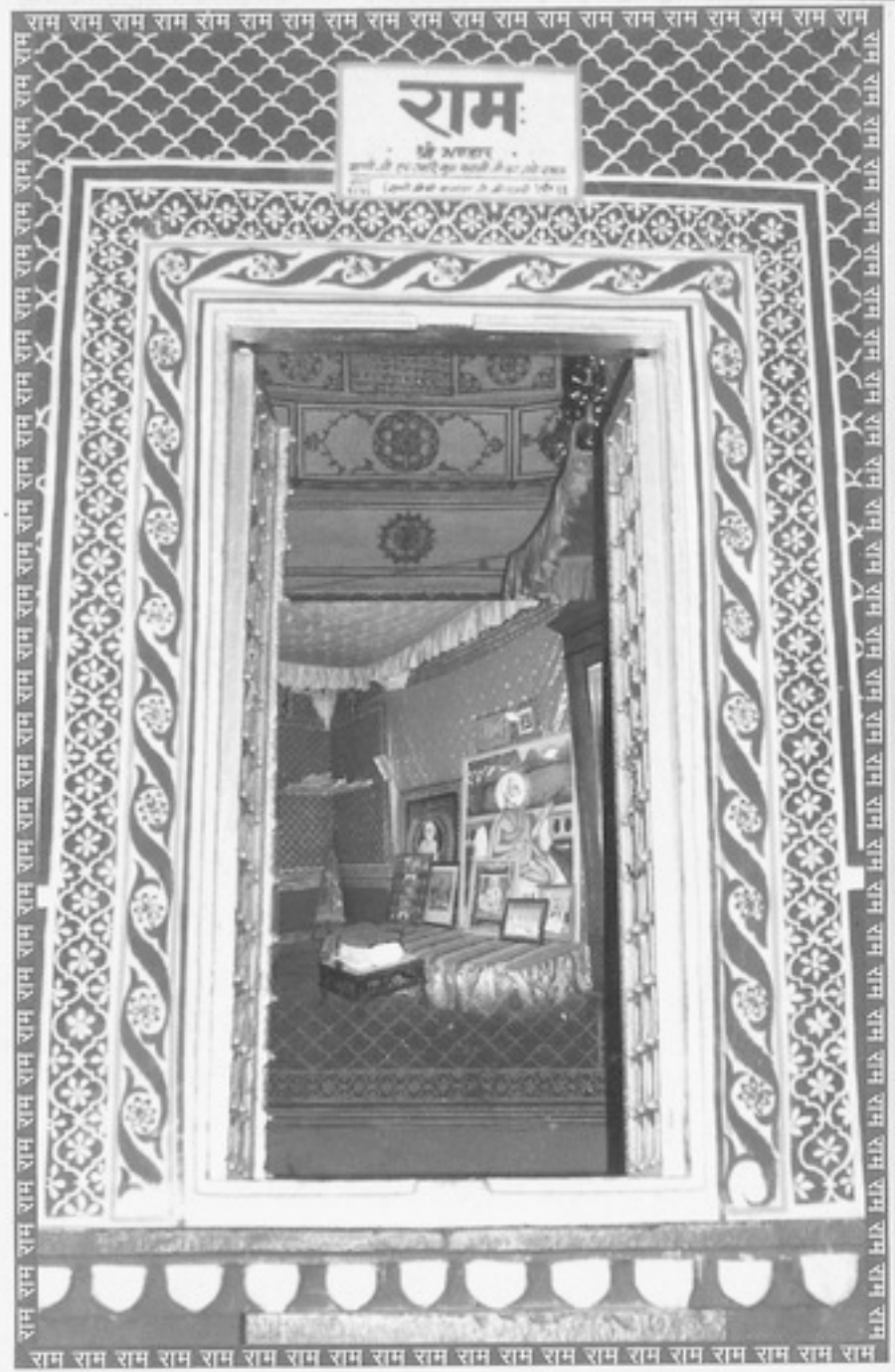

श्री भण्डार

(राजावत जी की छतरी)

राजाधिराज रणसिंहजी की धर्मपत्नी श्रीमती कुन्दना बाई राजावत ने श्री महाराज से मंत्र दीक्षा ली। श्री महाराज की असीम कृपा से उनके मन में यह प्रेरणा उत्पन्न हुई कि मेरे जीते जी मेरी जीवन्त छतरी में श्री महाराज को विराजमान करूं। यह सोचकर अपने नाखुन काटकर उसकी अन्त्येष्टी कर उस पर छतरी बनवाई, तथा श्री महाराज को छतरी में पधराया। श्री महाराज ने अपना पंच भौतिक शरीर इसी छतरी में त्यागा। यह छतरी सम्प्रदाय के प्रमुख भण्डार (श्री भण्डार) के रूप में विख्यात है। यहां पर फूलडोल के समय कम्बल जी महाराज विराजमान होते है। आद्यतन सभी आचार्य यहीं ब्रह्मलीन होते है।

सुमिरन

प्रेम नेम परतीति से भजिये केवल राम।
सांच शील समता लियां, आरत आठूं जाम।।
आरत आठूं जाम, कामना करम निवारो।
मैं मेरी मद मान, धार ममता न पसारो।।
रामचरण जब पाय हो जन आनन्द विश्राम।
प्रेम नेम परतीति से भजिये केवल राम।।

राम भजन बिन गति नहीं, समझ मन बारम्बार।
राम भजन सूं भय टले, जांमे फेर न सार।।
रामचरण भज राम कूं, सब आया इस मांहि।
न्यारा न्यारा साधतां, साध्या जावै नांहि।।

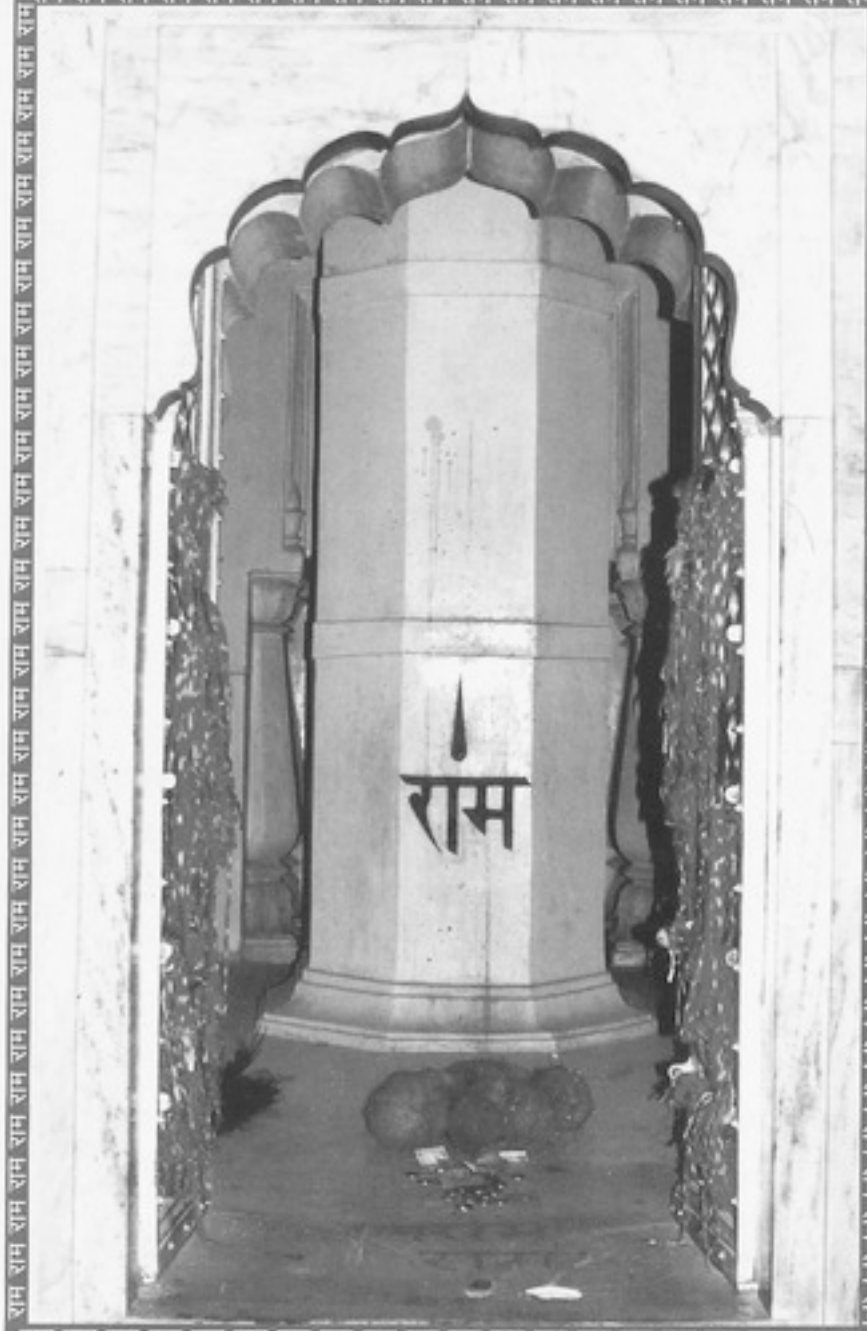

पूज्य स्तम्भ जी

स्वामीश्री रामचरण महाप्रभु वैशाख कृष्णा 5 गुरुवार सं. 1855 तदर्थ दिनांक 12.02.1723 को ब्रह्मलीन हुए। जहाँ उनकी पार्थिव देह का अग्नि संस्कार किया गया। उसी स्थल पर अष्टकोणीय समाधि स्तम्भ का निर्माण श्री रामनिवास धाम के आधार स्तम्भ के रूप में किया गया। यह प्रमुख श्रद्धा स्थल है। इसके चारों ओर चार दरवाजे एवं दो परिक्रमा है जहाँ बैठकर संत एवं भक्तजन भजन करते है यहां पर अद्‌भुत शांति का अनुभव होता है। यहां पर प्रतिवर्ष अनेकानेक भक्तजन अपनी मनोकामना पूर्ति हेतु लच्छा बांधते है एवं उनकी मनोकामना श्री महाराज की कृपा से पूर्ण होती है।

उपदेश

तन धारी त्रय बात की, ढील करो मति कोय।
रामभजन साधु दरश, दत्तब करतां सोय।।
दत्तब करता सोय, जाय तनु थिरता नाहीं।
को चंचल को धीर, कहां बनि है छिन माहीं।।
ताते कारज जीव को कीजै आतुर होय।
तन धारी त्रय बात की, ढील करो मति कोय।।

मानव तन दुर्लभ मिल्यो, अरु भाग्य मिल्यो सत्संग।
समझ पाय सतगुरु कहे, अब जनम न कीजे भंग।।

नाम नाव केवट गुरु, बहुत किया उपकार।
ई मौसर तिरिया नहीं, जाको वार न पार।।

बारहदरी

संगमरमर के समकक्ष पत्थर से भव्य बारहदरी बनी है। बारहदरी के बीचों बीच स्तम्भजी का ऊपरी सिरा है जिस पर शब्द चौकी विराजमान है एवं मुख्य बारहदरी है, यहीं पर गादी जी विराजमान है। जहां आचार्य श्री बिराजते है। मुख्य बारहदरी में संतजन बिराजते है एवं नीचे भक्तजन बैठते है। बारहदरी के पूर्वी भाग में सुन्दर छतरियां (कबाण्या) बनी है। पत्थरों में प्राकृतिक रूप से 'रकार' 'मकार' तुम्बी, तिलक कण्ठी, आदि चिन्ह बने है। इस बारहदरी के तीन परिक्रमा है, दो परिक्रमा सहित बारहदरी में 108 स्तम्भ है और 84 दरवाजे हैं।

बारहदरी में पूरे वर्ष श्री वाणी जी का पाठ, भजन एवं सत्संग होता है। फूलडोल के अवसर पर यहां दिन भर सत्संग होता है। आचार्य श्री के चातुर्मास का निर्णय भी यहीं होता है। प्रातः एवं सायंकाल दोनों समय बारह मास रामधुनी होती है। कम्बलजी महाराज फूलडोल के 5 दिन मुख्य बारहदरी में प्रातःकाल में विराजमान होते है। यहां नजर मोहरा भी लगा हुआ है।

पादिका

सतगुरु जी की पादिका, जे कोई परसै ध्याय।
त्रिविध ताप मिट जात है, उर सीतल होय जाय।।

ता पद में सन्त गरक है, सो ही पादिका जांण।
रामचरण दूजा भरम, सबही झूंठी बांण।।

एक भरोसो राम को, त्याग्यो आन उपास।
राम चरण जग सूं तरक, रामस्नेही दास।।

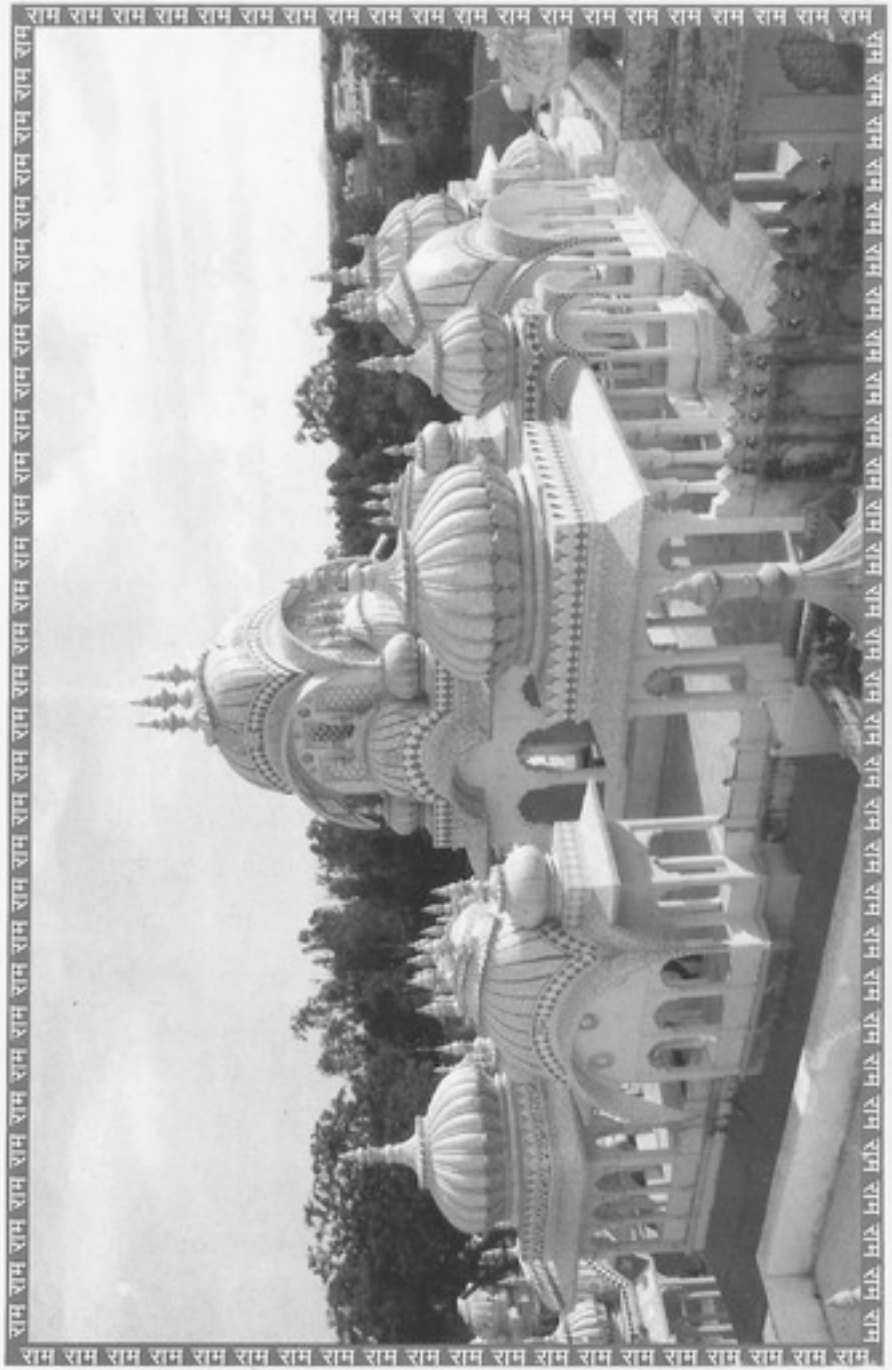

छत्र महल

श्री रामनिवास बैकुण्ठ धाम के तीसरे खण्ड में बारहदरी के ऊपर छत्र महल अति सुन्दर बना हुआ है। इसमें 25 घुमटी, जिस पर 47 कलश जिसमें 124 खम्भे है। सात प्रकार के सात झरोखे बनाये गये है। चारों दिशाओं में चार छतरियां स्थित है। छत्र महल पर एक चौथा खण्ड और बनाया गया है जिसका भेद किसी को नहीं मालूम। उसमें वाणी जी महाराज विराजमान है। यह छत्र महल श्री रामनिवास धाम पर छत्र की तरह लगता है। पूरे चार खण्डो का दृश्य अद्‌भुत ही जैसे विशाल जहाज हो अथवा पुष्पक विमान हो।

विचार

भूल भरम में पड़ गया, बाहिर ढूंढे राम।
घट मांहि खोजे नहीं, हेरै तीरथ धाम।।
हेरे तीरथ धाम, राम सुपने नहीं पावे।
घट घट व्यापक जांण, रट्या तत्काल मिलावै।।
रामचरण इक राम बिन, दूजा धर्म निकाम।
भूल भरम में पड़ गया, बाहिर ढूंढे राम।।

तृष्णा

सदा विपत्ति पूर बास जुगत वैरान रे।
घड़ी पहर दिन रैंण, हाय हैरान रे।।
काम दाम सुख लोभ, संग पचत है।
परिहां रामचरण रुचि नाहिं ज्ञान गुरु तजत है।।

गुरु मंत्र

राम नाम तारक मंत्र, सुमरे शंकर शेष।
रामचरण सांचा गुरू, देवे यो उपदेश।।
सदगुरू बख्शे राम नाम, शिष्य धारे विश्वास।
रामचरण निशदिन रटे, तो निश्चय होय प्रकाश।।

गुरु महिमा

कल्पवृक्ष गुरुदेव, कल्पना दूर निवारे।
भी चिन्तामणी भाय, चितवनि रंक उदारे।।
भक्ति–मुक्ति दातार, शंक कछु नहीं ताके।
अष्ट सिद्धि नव निधि, रहे चरणा नित जाके।
कामधेनु हर कामना, करे कुबेर निहाल।
यूं रामचरण गुरुदेव में, सुरतरु गौ मणी चाल।।

आरती

आरती रमता राम तुम्हारी, तुम से लागी सुरति हमारी।। टेर।।
रमता राम सकल भर पूरा, सूक्ष्म स्थूल तुम्हारा नूरा।।1।।
आरती सुमरण सेवा कीजे, सब निरदोष ज्ञान गह लीजे।।2।।
ये ही आरती ये ही पूजा, राम बिना दरसे नही दूजा।।3।।
शिव सनकादिक शेष पुकारे, यह आरती भवसागर तारे।।4।।
रामचरण अैसी आरती ताके, अष्ट सिद्धि नवनिधि चेरी जाके।।5।।

सुख का सागर राम है, दुःख का भंजन हार।
रामचरण तजिये नहीं, भजिये बारम्बार।।

।।श्रीमद् रामचरणाय नमः।। ।।श्रीमद् रामदयालाय नमः।।

अन्तर्राष्ट्रीय श्री रामस्नेही सम्प्रदाय शाहपुरा
श्री रामचरणाचार्य पीठ
पीठाधीश जगद्गुरु स्वामीजी श्री 1008

श्री रामदयाल जी महाराज

को फूलडोल महोत्सव–2005
के शुभ अवसर पर शत्–शत् नमन्

एवं सम्प्रदाय के वंदनीय संतों, रामस्नेही भक्तों,
''श्री रामस्नेही भास्कर'' मासिक परिवार को

नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ

शिवम् नर्सिंग होम

एच–64, एच.आई.जी. कमला नगर,
बाईपास रोड़, आगरा (उ.प्र.)
दूरभाष : 2542395 (ऑ.), 2181692 (नि.)

डॉ. खेम पंजवानी
(M.B.B.S. (Hins.) M.D. (Medi.)

सूरजपोल

श्री रामनिवास धाम का मुख्य प्रवेश द्वार पूर्व दिशा में बना हुआ है। जो सूरज पोल के नाम से विख्यात है। सूरजपोल दरवाजे पर अतिसुन्दर शोभायुक्त झरोखा बना हुआ है। जिसकी तीनों घुमटियों पर पांच कलश है। इसके दोनों ओर श्याम रंग के पत्थर की दो छतरियां है। इन छतरियों के पास ही उत्तर दक्षिण में दो कबाणिये, तीन–तीन कलशों के सफेद पत्थर के बने हुए अति सुन्दर छटा दिखाते है। इस प्रवेश द्वार में प्रवेश करने पर दोनों ओर सवा छः फिट चौड़ी नाल बनी है। जिसमें 13–13 सीढ़ियाँ है।

आचार्य श्री दक्षिण की नाल से ही पधारते है। आचार्य श्री के ब्रह्मलीन होने पर उनका विमान उत्तर की नाल से उतारा जाता है। सूरजपोल के बाहर सन्त एवं गृहस्थ अनुयायी अपने प्रियजनों की अस्थियाँ गाड़ते है। जो कि कुछ समय पश्चात् अदृश्य हो जाती है। सूरजपोल में ही गंगाजी का वास माना जाता है। उत्तर की नाल में श्री देवकरण जी तोषनीवाल की समाधि है।

जिज्ञासु

इष्ट राम रमतीत, आन कूं पूठ दई है।
पग नंगे, गुरु दर्श, दया की मूठ गही है।।
विषय त्याग, विष वचन, हांसि खिलवत नहीं जांणे।
हानि वृद्धि की बार, भरोसो हरि को आणे।।
जुवा, चोरी, परलुब्धि, झूंठ, कपटा नहीं राखे।
भांग, तमाखु, अमल, अखज, मद पान न चाखे।।
पानी बरते छांणि के, निरख पांव धरणी धरे।
वे रामस्नेही जाणिये, सो कारज अपणो करे।।

कंवरपदा की छतरी

लाल चौक एवं कंवरपदा की छतरी

श्री राम निवास धाम के उत्तर में श्री भण्डार की दांयी तरफ एवं आसन की छतरी के सम्मुख विशाल चौक लाल चौक के नाम से प्रख्यात है। लाल पत्थर एवं चारों ओर लाल दीवारें, जिस पर चित्रकारी की हुई है। स्वामीजी श्री नारायण दास जी महाराज के समय इसका निर्माण हुआ। इसके बीचों बीच कंवर पदा की छतरी बनी हुई है। इस छतरी में नये आचार्य श्री बनने पर उन्हें यहां लाकर उनका क्षौर कर्म किया जाता है। यहीं पर स्नान धारण करवाया जाता है एवं पूर्वाचार्य की चद्दर, कण्ठी, माला धारण करवाते है एवं यहीं से राजा एवं गणमान्य व्यक्ति हस्त कमल पकड़कर नवीन आचार्य श्री को गादी पर पधराते है। पूरे वर्ष बच्चों के झडूले (मुण्डन संस्कार) यहीं पर उतारे जाते है।

भण्डारी जी की छतरी : सांगरिया के ठाकुरों की महासती जी की छतरी में सम्प्रदाय के भण्डारी का आसन रहता है एवं यह भण्डारी जी की छतरी कहलाती है। इसके पास ही ध्रुव खिड़की है जो सूरजपोल के बन्द होने पर रामनिवास में आने जाने का प्रमुख द्वार है। इसके पश्चिम दिशा में सांगरिया का तिबारा, भादरा जून का तिबारा (वर्तमान में कार्यालय श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट) पुराना जल भण्डार (वर्तमान में कार्यालय प्रबन्धक) एवं नया जल भण्डार स्थित है। कार्यालय के सामने अन्दर की नौ छतरियां है जिसमें सन्तों के आसन रहते है। लाल चौक में ही श्री रामस्नेही साहित्य केन्द्र की स्थापना की गई है। पू. वाणीजी, सम्प्रदाय का साहित्य एवं स्वरूप (फोटो) यहां पर हर समय उपलब्ध रहते है।

पू. अणभैवाणी जी स्वामी श्री रामजन्न जी महाराज, स्वामी श्री मुरलीराम जी महाराज, स्वामी श्री देवादास जी महाराज, स्वामी श्री भगवानदास जी महाराज की वाणी व सर्वागसार मुद्रित उपलब्ध है।

धाम में स्थित महल

छत्र महल–नारायण निवास (छवियाँ का मालिया) : बारहदरी से छत्र महल जाने वाली नाल के ऊपरी छोर पर दाँयी तरफ सम्प्रदाय के चतुर्थ आचार्य स्वामीजी श्री नारायण दास जी महाराज के समय में इसका निर्माण हुआ और उनका निवास स्थान रहा। कालान्तर में यहाँ पर आचार्यो के स्वरूप (छवियाँ) विराजमान रहने से इसे छवियों के मालियाँ के नाम से पुकारा जाता है।

हरिनिवास : पंचम आचार्य स्वामीजी श्री हरिदास जी महाराज के राज्य में इसका निर्माण हुआ। इसकी नाल भण्डारी जी की छतरी के पास से जाती है। इसका जिर्णोद्धार एकादश आचार्य स्वामीजी श्री निर्भयरामजी महाराज एवं वर्तमान आचार्य श्री स्वामीजी श्री रामदयाल जी महाराज के समय में हुआ।

रंग महल : बारहदरी से पश्चिम में महलों की ओर जाने वाला रास्ता रंग महल के नाम से जाना जाता है।

छह चौकियाँ : रंग महल के बाद का स्थान छह चौकियों के नाम से जाना जाता है। षष्ठम आचार्य स्वामीजी श्री हिम्मतरामजी महाराज के समय से आचार्य श्री का प्रातः एवं सायं का भोजन प्रसाद यहीं होता आया है। साथ ही गर्मियों में प्रातःकालीन समय में आचार्य श्री का आसन यहीं लगता है।

हिम्मत निवास (कोठा) : षष्ठम् आचार्य स्वामीजी श्री हिम्मतरामजी महाराज के समय आचार्य श्री निवास का निर्माण हुआ। यह छह चौकियों से उत्तर में स्थित है। इसका एक रास्ता गोल नाल में होकर नीचे लाल चौक की तरफ आता है।

हवा महल : हिम्मत निवास के ऊपर का महल हवा महल के नाम से जाना जाता है। यहां पर आचार्य श्री फूलडोल में भोजन के पश्चात् विराजते है। संत एवं भक्त भोजन प्रसाद के बाद यहां दर्शन करते है।

बादल महल : हवा महल के पूर्व में स्थित महल को बादल महल के नाम से पुकारा जाता है। रंग महल, छह चौकियाँ, हिम्मत निवास, गोल नाल, हवा महल एवं बादल महल का निर्माण षष्ठम् आचार्य स्वामीजी श्री हिम्मतरामजी महाराज के राज्य में हुआ।

कँवर पदा का महल : गोल नाल से चढ़ने पर उत्तर में एवं हरि निवास के दक्षिण में स्थित महल कँवर पदा का महल एवं उसके साथ ही पूर्व दिशा में राम झरोखा स्थित है। कँवरपदा के महल का निर्माण सप्तम आचार्य स्वामीजी श्री दिलशुद्ध रामजी महाराज के समय हुआ। इसके नीचे के तिबारे का निर्माण हुआ। नवम् आचार्य श्री स्वामीजी श्री दयारामजी महाराज के समय राम झरोखे एवं जल भण्डार का निर्माण हुआ।

जग निवास : दशम आचार्य स्वामीजी श्री जगरामदास जी महाराज के राज्य में ध्रुव खिड़की के ऊपर हरि निवास के पूर्व में जग निवास का निर्माण हुआ। यहां से बारहदी के सीधे दर्शन होते है। वर्तमान आचार्य श्री स्वामीजी श्री रामदयाल जी महाराज के समय इसका जिर्णोद्धार करवाया गया है।

रामकिशोर निवास : हरि निवास से पश्चिम में स्थित महल का निर्माण द्वादश आचार्य स्वामीजी श्री रामकिशोर जी महाराज के राज्य में हुआ। इसके साथ ही एक विशाल हॉल का निर्माण भी किया गया जहाँ पर फूलडोल में आचार्य श्री की पूजा–आरती की जाती है। इसे रामकिशोर सभागार के नाम से पुकारा जाता है।

मुनि जी का मालिया :–रामनिवास धाम के नैऋत्य (दक्षिण–पश्चिम) में प्रथम तल पर स्थित मुनि जी का मालिया सम्प्रदाय के मुनि सन्तों की तपस्या स्थली रहा है। यहाँ पर पूज्य मुनि जी क्षम्याराम जी महाराज एवं अन्य कई मुनि सन्तों ने मौन रहकर कठिन तपस्या की है। वर्तमान में मुनि जी श्री मूरतरामजी यहाँ विराजमान है। आपने पिछले तरेह वर्षो तक मौन साधना कर इसी वर्ष मौन का समापन किया है।

विदेही भक्ति गुफा :– रामनिवास धाम के पार्श्व भाग में भोजन शाला से पूर्व बावड़ी के मध्य में विदेही भक्ति गुफा है। जहाँ सम्प्रदाय के विदेही संत अपना आसन लगाते एवं तपस्या करते थे। यह गुफा जीर्ण शीर्ण हो गयी थी। पूज्य आचार्य श्री के द्वारा स्वामी श्री रामचरण निर्वाण द्विशताब्दी समारोह के शुभ अवसर पर इसका जीर्णोद्धार करवाया गया।

भोजन शाला :– रामनिवास धाम के दक्षिण पश्चिम में विशाल भोजन शाला स्थित है। इसका निर्माण ब्रह्मलीन आचार्य श्री रामकिशोर जी महाराज ने करवाया एवं जीर्णोद्धार वर्तमान आचार्य श्री स्वामीजी श्री रामदयाल जी महाराज ने करवाया। यहाँ पर सैकड़ों व्यक्ति बैठकर एक साथ प्रसाद पाते है। फूलडोल महोत्सव में यहाँ का दृश्य बड़ा ही दर्शनीय एवं रोचक होता है।

सोरठा

काल मिटाये दूर, पूर महर महाराज कर
सतगुरु आनन्द मूर, चूर करम चेतन किया।
मिलिया परम उदार, करम काल सबही कट्या
दिया नाम तत्सार, जनम जनम का दुख मिट्या।।

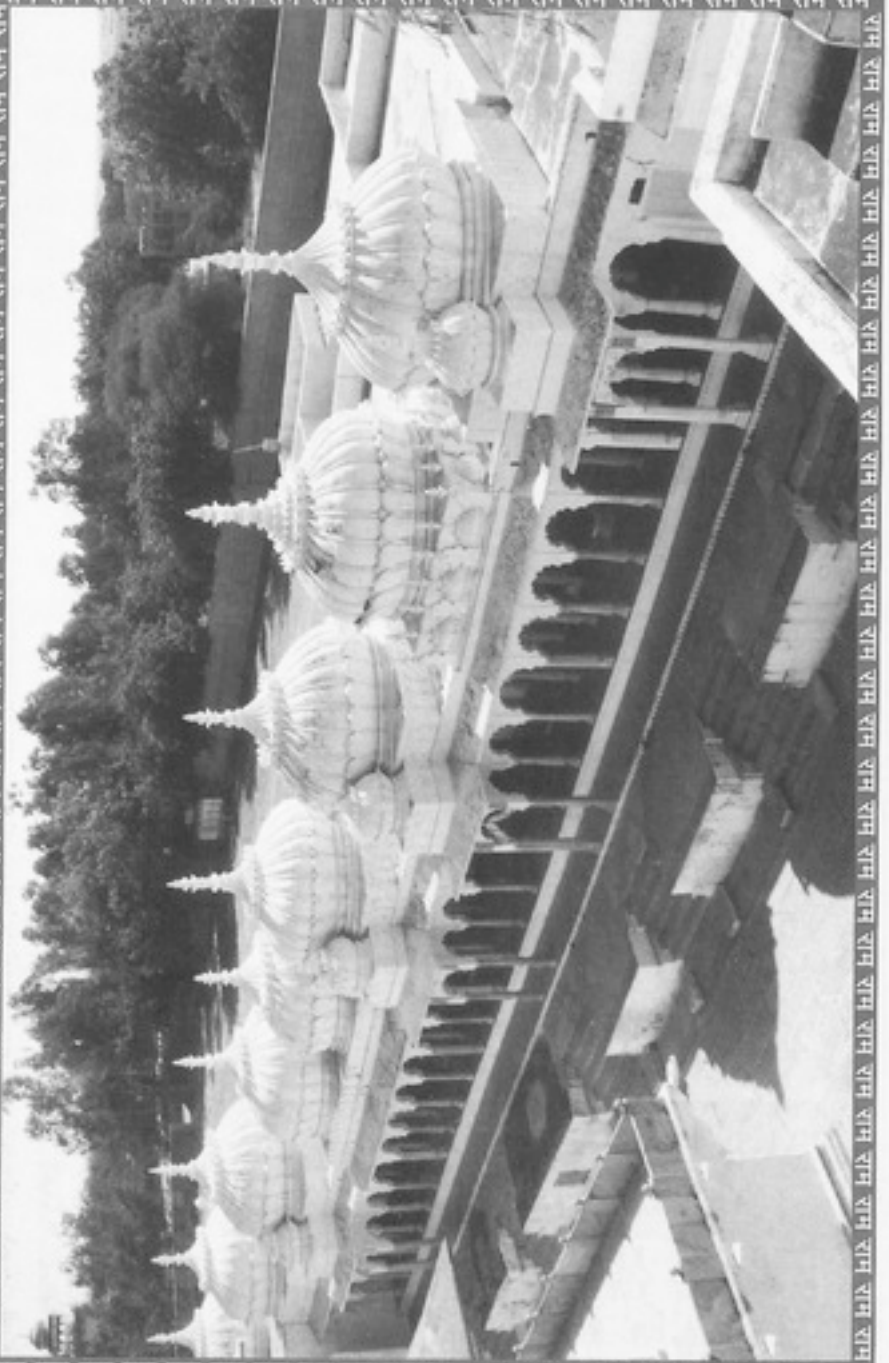

समाधियाँ (अन्दर की)

श्री रामनिवास धाम के दक्षिण भाग में पूर्वाचार्यो की एवं श्री महाराज के शिष्यों की समाधियाँ बनी हुई है। सुन्दर कलाकृति की छतरियों से सुसज्जित यह समाधियाँ मनमोहक है। अन्दर की ओर स्वामीजी श्री रामजन्न जी महाराज, स्वामीजी श्री दुल्हेरामजी महाराज, स्वामीजी श्री चत्रदास जी महाराज, स्वामीजी श्री हरिदासजी महाराज एवं सूरतरामजी महाराज (जयपुर–सांगानेर), उद्धवदास जी महाराज (काकाजी), कान्हड़दास जी महाराज (बड़ा) (सागवाड़ा), रामसेवग जी महाराज (छोटा) (चेचट) की समाधियाँ है। इन समाधियों एवं रामनिवास के बीच के स्थान पर फूलडोल में संतों की पंगत लगती है।

विश्वास

राम भरोसा राखिये, राम सकल के मांहि।
तेरा मन को सांच है सो सांई छानो नांहि।।
सो साई छांनो नाहि, न्याव करता के सारे।
नहि सांच कूं आंच सांच कूं राम उबारे।।
दुख सुख सम्पत्ति आपदा, परालब्ध भुगतांहि।
राम भरोसा राखिये, राम सकल के मांहि।।

सृष्टि बाग वृक्ष जीव सब, बागवान करतार।
जिन रोप्यां सो सींचती, बन्दा क्यों ले भार।।

राम धणि को राख भरोसा, संक्या सबकी तोड़े।
रामचरण वै शरण सबल के, फेर न जग सूं जोड़े।।

समाधियाँ (बाहर की)

सूरजपोल के बांई ओर बाहर की समाधियों में क्रमशः स्वामीजी श्री नारायणदास जी महाराज, ध्यानदास जी महाराज (उदयपुर), तुलछीदास जी महाराज (खानपुर), भगवान दास जी महाराज (जोधपुर), स्वामीजी श्री हिम्मतरामजी महाराज, स्वामीजी श्री दिलशुद्धरामजी महाराज, स्वामीजी श्री धर्मदास जी महाराज, स्वामी श्री दयारामजी महाराज, स्वामीजी श्री जगरामदास जी महाराज, मुनिजी श्री क्षम्यारामजी महाराज (खाचरोद), स्वामीजी श्री निर्भयरामजी महाराज एवं स्वामीजी श्री दर्शनरामजी महाराज की सुन्दर छतरियाँ बनी हुई है। फूलडोल उत्सव पर संतों के आसन इन्हीं छतरियों में अपनी गुरु परम्परानुसार होते है। अन्दर एवं बाहर की कुल 20 छतरियाँ बड़ी ही भव्य एवं मनमोहक बनी हुई है। जो दूर से ही दर्शनार्थियों को अपनी ओर आकर्षित करती हे।

वीनती

वीनती राम निरंजन नाथ सूं।
हाथ गहो हम तोर ऋणी है।।
और नहीं तिहूं लोक में दीसत।
श्याम सदा सुख दानी धनी है।।
तेरे तो प्रभु जी बड़े बड़े दास है।
मोसे गरीब की कौन गिनी है।।
राम जी बिड़द विचार हो रावरो।
मोसूं कछु नहीं भक्ति बनी है।।

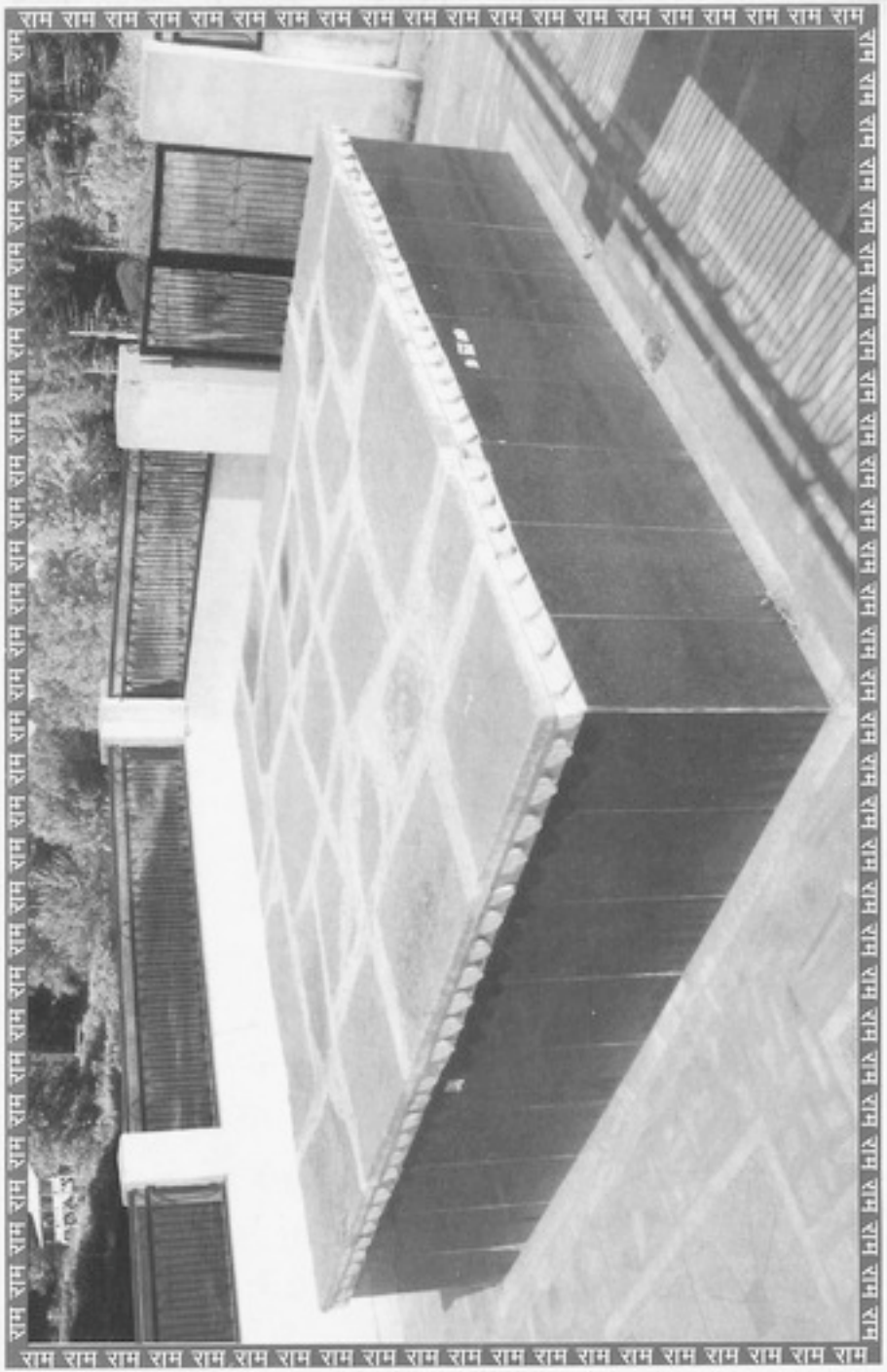

स्वरूपा बाई का चबूतरा

समाधियों के पीछे श्री महाराज के शिष्य श्री नवलरामजी मंत्री की सुपुत्री स्वरुपा बाई की समाधि (चबूतरा) बनी हुई है। यह श्री महाराज की गृहस्थ शिष्या थी। श्री महाराज के अंतिम समय में चांवल का प्रसाद स्वरुपा बाई ने लाकर हाजिर किया था और उस प्रसाद को रामजन्न जी महाराज ने श्री महाराज को नजर किया एवं श्री महाराज ने आरोगा। उस समय जो शेष प्रसाद बचा वही अद्यतन प्रसादी के रूप में सम्प्रदाय में काम में लिया जाता है। स्वरुपा बाई के 10 भजन उनकी वाणी एवं 2 भजन विरह के है। उनके द्वारा वाणी जी महाराज श्री रूपरामजी जोशी से लिखवाया गया। उस वाणी के पुस्तक का पाठ होली के जागरण से लेकर पंचमी के जागरण तक प्रतिदिन बारहदरी में होता है। उसे स्वरुपा बाई का पुस्तक कहते है। फूलडोल उत्सव पर आने वाले थालों का प्रारम्भ भी उनके द्वारा किया गया। स्वरूपा बाई के चबूतरे की एक विशेषता यह है कि प्रचण्ड गर्मी में भी समाधि (चबूतरे) का मध्य भाग अपेक्षाकृत ठण्डा रहता है।

सुमिरन

राम रह्या भरपूर दूर काहे कूं फिरिये।
अपणा घट कूं खोज रैण दिन सुमरन करिये।।
ज्यूं गारा की कलणि नीर की सीर न दरशे।
करमा के आवरण राम नेड़ो नहीं परशे।।
ज्यूं चकमक में आगि पथर लग परगट होई।
धीरज सूं कर ध्यान शब्द गुरु को ले सोई।।
रामचरण करणी बिना, जगे ने प्रेम परकाश।
मीन रहे मुख भींच के, जल में मरे पियास।।

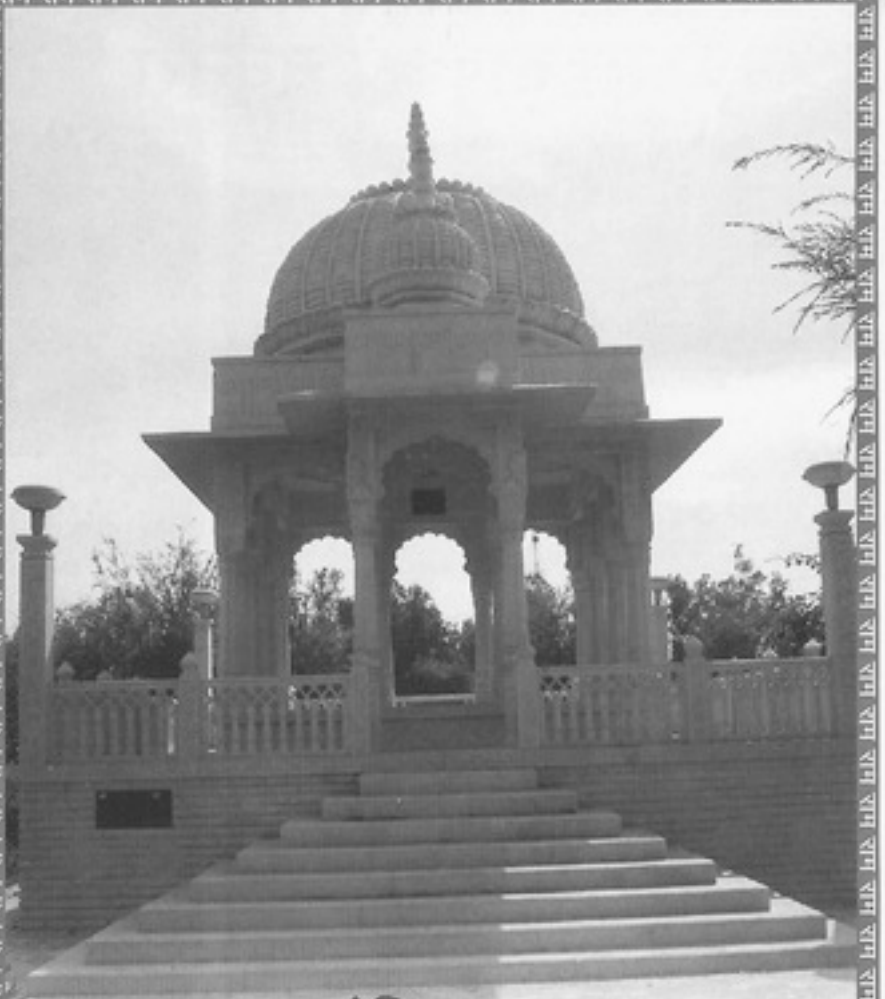

शांति स्थल

तैरहवें आचार्य स्वामीजी श्री रामकिशोर जी महाराज का समाधि स्थल रामचरण द्वार से प्रवेश के पश्चात् 50–60 कदम आगे चलने पर बांयी ओर स्थित है। जैसलमेरी पत्थरों से बना पीले रंग का स्मारक अति सुन्दर छटा बिखेरता है। चारों ओर अति रमणीय उद्यान लगा है।

पूज्य कम्बल जी

बैशाख कृष्णा 5 गुरुवार वि.सं. 1855 को श्री महाराज ब्रह्मलीन हुए। उस समय अनेकानेक चमत्कार हुए। उनमें मृत्यु के बाद राम–राम का प्रत्युत्तर राम–राम से देना। विमान जलते समय दक्षिण की ओर झुकने पर एक भक्त द्वारा यह कहना कि आपका विमान तो उत्तर दिशा में झुकना चाहिये दक्षिण में क्यूं, तो तुरन्त विमान का दक्षिण दिशा से उत्तर दिशा में झुकना आदि है। किन्तु अग्नि संस्कार के पश्चात् तीसरे दिन जब क्षार (पुष्प, अस्थियाँ) एकत्रित करने भक्त जन पहुंचे तो एक विलक्षण, अद्भुत चमत्कार सभी की प्रतीक्षा कर रहा था और वह था पूज्य कम्बल जी, जो श्री महाराज को धारण करवायी गई थी, का जस का तस मिलना। कहीं से भी नहीं जली। पूज्य कम्बल जी महाराज के दर्शन फूलडोल महोत्सव के पांच दिनों में होते है। पूज्य कम्बल जी महाराज को बारहदरी में सत्संग के समय उच्चासन पर विराजमान किया जाता है। श्री भण्डार में भी आपके दर्शन करवाये जाते है।

विश्वास

राम तुम्हारो आसरो, राम तुम्हारो ध्यान।
राम तुम्हारो भजन मुख, राम तुम्हारो ध्यान।।
राम तुम्हारो ध्यान, राम तुम सिर पर राजो।
आगे पीछे राम, दशु दिशि राम ही गाजो।।
रामचरण इक राम बिन, मन माने नहीं आन।
राम तुम्हारो आसरो, राम तुम्हारो ध्यान।।

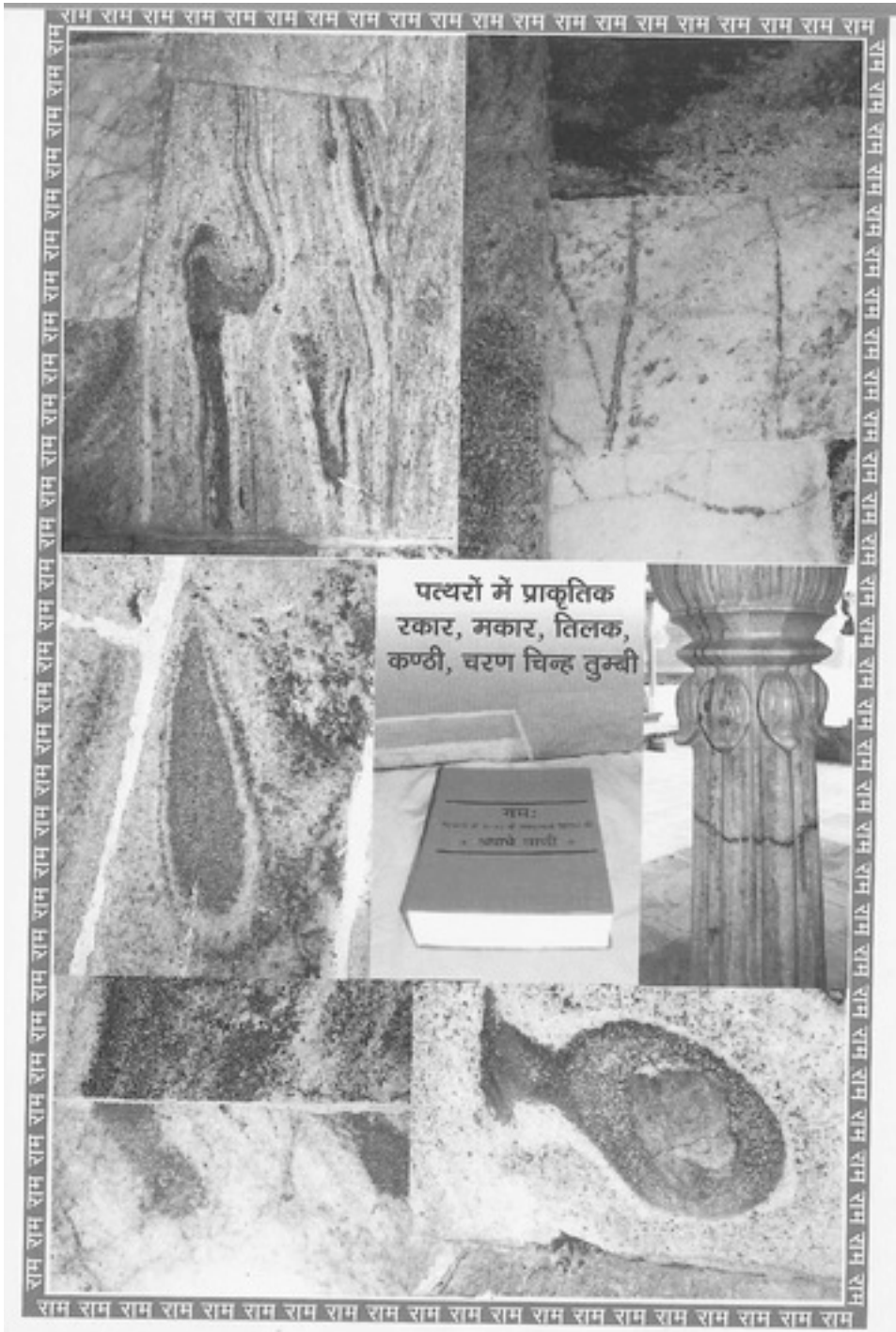

पूज्य अणभैवाणी जी

12 वर्ष की कठिन साधना के फलस्वरूप वि.सं. 1820 (सन् 1764) में स्वामीजी श्री रामचरण जी महाराज के श्री मुख से पूज्य अणभैवाणी जी मुखरित हुई। जिसे आपके प्रमुख शिष्य श्री नवलराम जी एवं श्री रामजन्न जी महाराज ने लिपिबद्ध किया। 36397 छन्द परिमाण वाली वाणी जी में ज्ञान, रामभक्ति, वैराग्य और अहिंसा मुख्य विषय है। प्रत्येक शब्द में 'राम' की छाप है। साथ ही उस अगम तक पहुंचने का सरल एवं सुगम मार्ग प्रशस्त किया है।

'अणभैवाणी' पहले हस्तलिखित ही थी। सन् 1925 में 11वें आचार्य श्री निर्भयरामजी महाराज के समय श्री महाराज द्वारा उच्चारित सभी ग्रन्थों का एक वृहद् संग्रह ''श्री रामचरण जी महाराज की अणभैवाणी'' के नाम से प्रकाशित करवाया गया। सन् 1996 में वर्तमान आचार्य श्री स्वामीजी श्री रामदयाल जी महाराज द्वारा 71 वर्ष बाद पुनः इसका प्रकाशन कुरज चातुर्मास के दौरान करवाया गया है। पूज्य वाणीजी श्री महाराज का वाङ्मय स्वरूप है। सरल भाषा के इस ग्रन्थ का आनन्द तो इसमें अवगाहन करके ही उठाया जा सकता है। जहाँ श्री वाणी जी विराजमान रहते है। वहाँ अष्ट सिद्धि नौ निधियाँ अपने आप वास करती है।

पूज्य अणभैवाणी में निम्न कृतियाँ संग्रहित है :–

(1) अणभैवाणी (2) गुरु महिमा (3) नाम प्रताप (4) शब्द प्रकाश (5) अणभै विलास (6) सुख विलास (7) अमृत उपदेश (8) जिज्ञास बोध (9) विश्वास बोध (10) विश्राम बोध (11) समता निवास (12) राम रसायण (13) चिंतावणी (14) मनखण्डन (15) गुरु शिष्य गोष्ठी (16) ठिग पारख्या (17) जिंद पारख्या (18) पण्डित संवाद (19) लछ अलछ जोग (20) बेजुक्ति तिरस्कार (21) काफर बोध (22) शब्द (23) गावा का पद (22) दृष्टान्त सागर।

फूलडोल महोत्सव

अन्तर्राष्ट्रीय श्री रामस्नेही सम्प्रदाय शाहपुरा का प्रमुख महोत्सव फूलडोल है। भक्तों ने निवेदन किया कि एक वार्षिकोत्सव होना चाहिये, जिसमें सर्व संत एवं भक्त एकत्रित होवें। तक श्री महाराज ने फरमाया कि फाल्गुन का महिना है, भक्त प्रहलाद की परीक्षा दिवस होली भी निकट है, अतः होली के दिन ही उत्सव मनाना उपयुक्त होगा। भक्तों ने तैयारी की थी, महाराज को शहर में जागरण हेतु पगमण्डे, चँवर छत्र ढुलाते हुए जय–जयकार के साथ पधराया। नाम प्रताप ग्रन्थ भ्क्त प्रहलाद के चरित्र का पाठ हुआ। प्रवचन के पश्चात् अखण्ड राम नाम का जाप चलता रहा। उस मध्य आकाश से फूलों की वर्षा हुई, यह देखकर श्री महाराज ने फरमाया कि इस अवसर पर फूलों की वर्षा हुई है अतः इस उत्सव का नाम फूलडोल रखा जाय। इसलिए वि.सं. 1822 से ''फूलडोल महोत्सव'' विगत 240 वर्षो से अद्यतन मनाया जा रहा है।

श्री महाराज के समय एक दिन होली का जागरण ही होता था। स्वामीजी श्री रामजन्नजी महाराज के समय पांच दिन एवं कुल चालीस दिन का होने लगा। वर्तमान में फूलडोल फाल्गुन शुक्ला 11 से चैत्र शुक्ला पंचमी तक कुल पच्चीस दिन के होते है। मुख्य समारोह पांच दिन का होता है। जिसमें होली का एवं पंचमी को जागरण होता है।

एकम् से पंचमी तक ब्रह्म मुहर्त में, प्रातःकाल, दोपहर एवं रात्रि में सत्संग प्रवचन होते है। पूज्य आचार्य श्री एवं सम्प्रदाय के विद्वान संत धर्म सभा को अपने ज्ञान भाक्ति वैराग्यमय शब्दों से सम्बोधित करते है। राष्ट्र एवं अन्तर्राष्ट्र से सभी संत, भक्त अनुयायी, श्रद्धालु एकत्रित होकर इसे लघु कुम्भ का रूप प्रदान कर देते है। नया बाजार स्थित राममेड़ियों से पूज्य अणभैवाणी जी का जुलूस एवं थाल प्रतिदिन निकाले जाते है। पंचमी को आचार्य श्री के चातुर्मास का निर्णय होता है।

अन्तर्राष्ट्रीय श्री रामस्नेही सम्प्रदाय की

आचार्य परम्परा

आद्याचार्य स्वामीजी श्री १००८ श्री रामचरण जी महाराज

1 स्वामीजी श्री रामजन्न जी महाराज
2 स्वामीजी श्री दूल्हेराम जी महाराज
3 स्वामीजी श्री चत्रदास जी महाराज
4 स्वामीजी श्री नारायणदास जी महाराज
5 स्वामीजी श्री हरिदास जी महाराज
6 स्वामीजी श्री हिम्मतरामजी महाराज
7 स्वामीजी श्री दिलशुद्धरामजी महाराज
8 स्वामीजी श्री धर्मदास जी महाराज
9 स्वामीजी श्री दयाराम जी महाराज
10 स्वामीजी श्री जगरामदास जी महाराज
11 स्वामीजी श्री निर्भयरामजी महाराज
12 स्वामीजी श्री दर्शनरामजी महाराज
13 स्वामीजी श्री रामकिशोर जी महाराज
14 स्वामीजी श्री रामदयाल जी महाराज (वर्तमान)

प्रतिवर्ष मनाये जाने वाले प्रमुख उत्सव

–स्वामीजी श्री 108 श्री रामकिशोरजी महाराज का पाटोत्सव चैत्र सुदी 8
–स्वामीजी श्री 108 श्री हरिदासजी महाराज निर्वाण तिथि चैत्र सुदी 8
–स्वामीजी श्री 108 श्री हिम्मतरामजी महाराज निर्वाण तिथि चैत्र सुदी 9
–स्वामीजी श्री 108 श्री जगरामदास जी महाराज निर्वाण तिथि चैत्र सुदी 13
–स्वामीजी श्री ध्यानदासजी महाराज निर्वाण तिथि चैत्र सुदी पूर्णिमा, उदयपुर
–स्वामीजी श्री 1008 श्री रामचरण महाराज निर्वाण तिथि वैसाख बुदी 5, शाहपुरा
–स्वामीजी श्री 108 श्री हिम्मतरामजी महाराज का पाटोत्सव वैसाख बुदी 5
–स्वामीश्री 108 श्री दिलशुद्ध रामजी महाराज का पाटोत्सव वैसाख बुदी 6
–श्री देवकरण जी तोषनीवाल निर्वाण तिथि वैसाख बुदी 6
–स्वामी जी श्री 108 श्री निर्भयरामजी महाराज का पाटोत्सव वैसाख बुदी 10
–स्वामीजी श्री 108 श्री रामजन्न जी महाराज का पाटोत्सव वैसाख सुदी 2
–स्वामीजी श्री 108 श्री दुल्हैरामजी महाराज निर्वाण तिथि आषाढ़ बुदी 10
–स्वामीजी श्री 108 श्री रामजन्न जी महाराज निर्वाण तिथि आषाढ़ बुदी 11
–स्वामीजी श्री 108 श्री दयारामजी महाराज निर्वाण तिथि आषाढ़ सुदी 4
–स्वामीजी श्री 108 श्री दुल्हैरामजी महाराज का पाटोत्सव आषाढ़ सुदी 8
–श्री रामस्नेही सम्प्रदाय का चातुर्मास का शुभारंभ आषाढ़ सुदी 11
–स्वामीजी श्री भगवानदास जी महाराज निर्वाण तिथि श्रावण सुदी 1
–श्री कुशलरामजी बिड़ला निर्वाण तिथि श्रावण सुदी 1
–स्वामीजी श्री 108 श्री निर्भयरामजी महाराज निर्वाण तिथि श्रावण सुदी 13
–श्री प्होकरदास जी महाराज निर्वाण तिथि, श्रावण सुदी 14, दिल्ली
–श्री क्षम्यारामजी महाराज निर्वाण तिथि, श्रावण सुदी पूर्णिमा, खाचरौद
–श्री मुरलीराम जी महाराज निर्वाण तिथि भादवा बुदी 1, रायपुर (मारवाड़)
–स्वामीजी 108 श्री कृपारामजी महाराज निर्वाण तिथि भादवा सुदी 6, दांतड़ा
–श्री रामदास जी महाराज निर्मोही निर्वाण तिथि, आसोज सुदी 2, मालपुरा
–श्री रामनिवास जी महाराज निर्वाण तिथि, आसोज सुदी 6, ईडर
–श्री इच्छारामजी महाराज निर्वाण तिथि, आसोज सुदी 6, ईडर
–श्री रामस्नेही सम्प्रदाय शाहपुरा चातुर्मास समापन आसोज सुदी 11
–स्वामीजी श्री दिलशुद्ध रामजी महाराज निर्वाण तिथि आसोज सुदी 12
–स्वामीजीश्री 108 श्री दर्शनराम जी महाराज निर्वाण तिथि कार्तिक बुदी 1
–स्वामीजी श्री 108 श्री चत्रदास जी महाराज पाटोत्सव कार्तिक बुदी 2
–श्री द्वारिकादास जी महाराज निर्वाण तिथि, कार्तिक बुदी 3, धलपट
–स्वामीजी श्री 108 श्री जगरामदासजी महाराज पाटोत्सव कार्तिक बुदी 5
–स्वामीजी श्री 108 श्री दर्शनराम जी महाराज पाटोत्सव कार्तिक बुदी 5
–स्वामीजी श्री 108 श्री धर्मदास जी महाराज पाटोत्सव कार्तिक बुदी 13
–स्वामीजी श्री 108 श्री धर्मदास जी महाराज निर्वाण तिथि कार्तिक सुदी 5
–स्वामीजी श्री 108 श्री नारायणदास जी महाराज निर्वाण तिथि मार्गशीर्ष बुदी 9
–स्वामीजी श्री 108 श्री हरिदास जी महाराज का पाटोत्सव मार्गशीर्ष सुदी 6
–स्वामीजी श्री 108 श्री रामकिशोर जी महाराज निर्वाण तिथि पौष बुदी 11
–स्वामीजी श्री 108 श्रीरामदयाल जी महाराज का पाटोत्सव पौष सुदी 8
–श्री जीवणदास जी महाराज निर्वाण तिथि, पौष सुदी 10, नागोर
–श्री देवादास जी महाराज निर्वाण तिथि, पौष सुदी 12, जोधपुर
–मुरलीरामजी महाराज का जयन्ति महोत्सव, माघ बुदी 7, रायपुर (मारवाड)
–भक्तिमती स्वरूपाबाई निर्वाण तिथि, माघ बुदी 7, शाहपुरा
–श्री भाऊदास जी महाराज निर्वाण तिथि, माघ विद अमावस्या, नायण (नागदा)
–स्वामीजी श्री 108 श्री चत्रदास जी महाराज निर्वाण तिथि, माघ बुदी 30, शाहपुरा
–स्वामीजी श्री 1008 श्रीरामचरणजी महाराज जयन्ति महोत्सव माघ सुदी 14
–स्वामीजी श्री 108 श्री संतदास जी महाराज निर्वाण तिथि, फाल्गुन बुदी 7, दांतड़ा
–श्री चेतनदास जी महाराज (कोटा) निर्वाण तिथि फाल्गुन बुदी 7
–शाहपुरा फूलडोल महोत्सव में सन्तों का आगमन फाल्गुन सुदी 11
–फूलडोल महोत्सव प्रथम जागरण फाल्गुन सुदि पूर्णिमा
–फूलडोल महोत्सव शुभारंभ चैत्र बुदी 1
–फूलडोल मुख्य उत्सव, आचार्यश्री चातुर्मास निर्णय, चैत्र बुदी 5

श्री महाराज के शिष्यों के प्रमुख बरसी महोत्सव

–स्वामीजी श्री कान्हड़दास जी महाराज (छोटा) निर्वाण तिथि पौष सुदी 5
(पौष सुदी 5 से माघ कृष्णा अमावस्या पर्यन्त, रामद्वारा टोंक)

–स्वामीजीश्री भगवानदास जी महाराज बरसी माघ सुदी 1
(माघ कृष्णा 1 से माघ शुक्ला पूर्णिमा पर्यन्त, बड़ा रामद्वारा, जोधपुर)

–स्वामीजी श्री रामप्रताप महाराज निर्वाण तिथि माघ सुदी 2
(माघ शुक्ला 2 से माघ शुक्ला पूर्णिमा पर्यन्त, रामद्वारा, सवाई माधोपुर)

–स्वामीजी श्री मुरलीरामजी महाराज बरसी फाल्गुन बुदी 1
(फाल्गुन कृष्णा 1 से फाल्गुन कृष्णा 30 पर्यन्त, रामद्वारा, रायपुर (मारवाड़)

–स्वामीजी श्री सूरतराम जी महाराज निर्वाण तिथि फाल्गुन सुदी 2
(फाल्गुन शुक्ला 2 से फाल्गुन शुक्ला10, रामद्वारा, सांगानेर (जयपुर)

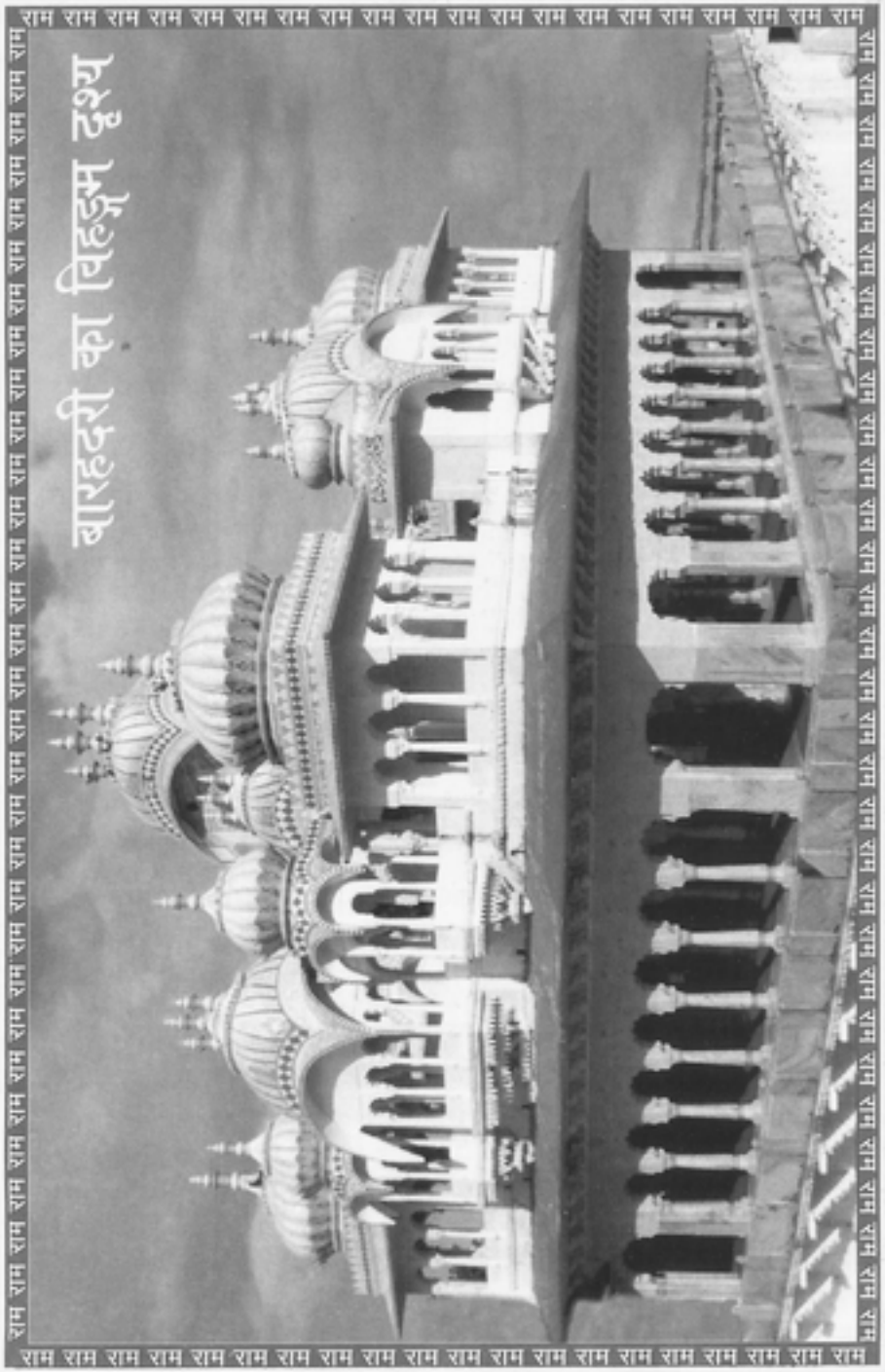

मानव सेवा में समर्पित

श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट, शाहपुरा

(देवस्थान विभाग राजस्थान सरकार द्वारा पंजीकृत 6/भील/85)

उद्देश्य :

(1) स्वामी श्री रामचरण महाप्रभु के पावन सिद्धान्तों का प्रचार–प्रसार।
(2) राष्ट्र एवं मानव सेवा।
(3) सुशिक्षित एवं सुसंस्कृत समाज का निर्माण।
(4) व्यसन मुक्त समाज का निर्माण।
(5) निर्धन एवं असहाय की सहायता।

प्रवृत्तियाँ :

सन्त साहित्य प्रकाशन/सन्त सेवा/सदाव्रत/शिक्षा/
औषध वितरण/गौसेवा/पक्षी सेवा

सेवा संस्थान :

1. श्री रामस्नेही प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय, शाहपुरा
2. श्री रामकिशोर एलोपेथी चिकित्सालय, शाहपुरा
3. श्री रामदयाल आयुर्वेदिक चिकित्सालय, शाहपुरा
4. श्री रामस्नेही चिकित्सालय, भीलवाड़ा
5. श्री रामकिशोर सदाव्रत, शाहपुरा, पुष्कर, इन्दौर

प्रकाशन :

आत्म चिन्तन एवं सदाचार प्रेरक
श्रीरामस्नेही भास्कर मासिक पत्रिका

प्राकृतिक आपदा, राष्ट्रीय सुरक्षा एवं संकट पूर्ण घड़ियों में ट्रस्ट तन–मन–धन से सहायता के लिए सदैव तत्पर।
ट्रस्ट को दान दी जाने वाली राशि धारा 80–जी के तहत आयकर विभाग द्वारा आयकर से मुक्त है।

सेवा प्रकल्प

निर्भयराम रामशाला : रामनिवास धाम के पूर्व में सड़क के दूसरे छोर पर स्थित विशाल निर्भयराम रामशाला स्थित है। बाहर से आने वाले यात्रियों के ठहरने के लिये आचार्य स्वामीजी श्री निर्भयरामजी महाराज ने इसका निर्माण वि.सं. 1995 तदर्थ् 1920 में करवाया। करीब 180 कमरों वाली इस रामशाला के अग्रिम भाग एवं ऊपर की मंजिल का निर्माण द्वादश आचार्य स्वामीजी श्री रामकिशोर जी महाराज ने करवाया। तीन गह वाली इस रामशाला में हजारों यात्री फूलडोल के समय ठहरते है। यहाँ पर नि:शुल्क चिकित्सा शिविरों के आयोजन एवं सामाजिक कार्यक्रमों के आयोजन पूरे वर्ष होते रहते है।

रामस्नेही प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय : श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट एवं श्री रामस्नेही सेवा समिति द्वारा संचालित रामशाला भवन में प्रथम खण्ड में प्रथम मंजिल पर रामस्नेही प्रवेशिका संस्कृत विद्यालय चलता है। यहाँ कक्षा एक से दसवीं तक नि:शुल्क विद्या अध्ययन करवाया जाता है। इसका प्रारम्भ स्वामीजी श्री रामकिशोर जी महाराज के समय सन् 1991 में प्राथमिक स्तर पर हुआ। सन् 1995 में इसे उ.प्रा. स्तर तथा 1998 में प्रवेशिका की मान्यता प्राप्त हुई। इस विद्यालय के प्रधानाध्यापक जी श्री सुखदेव जी शर्मा संस्कृत साहित्याचार्य है जो विद्यालय में प्रारम्भ से अद्यतन विद्यमान है। विद्यालय में वाद विवाद, श्लोक पाठ, संगीत, सामान्य ज्ञान एवं वॉलीबाल, फुटबॉल, कबड्डी, एथेलेटिक्स आदि भी करवाये जाते है। विद्यालय में सभी वर्गो के छात्र –छात्रा बिना किसी भेदभाव के देववाणी संस्कृत का अध्ययन करते है। कई छात्र 8वीं बोर्ड मेरिट में भी आये है। वर्तमान में इस विद्यालय में 275 विद्यार्थी अध्ययनरत है एवं 15 कर्मचारी गण है ।

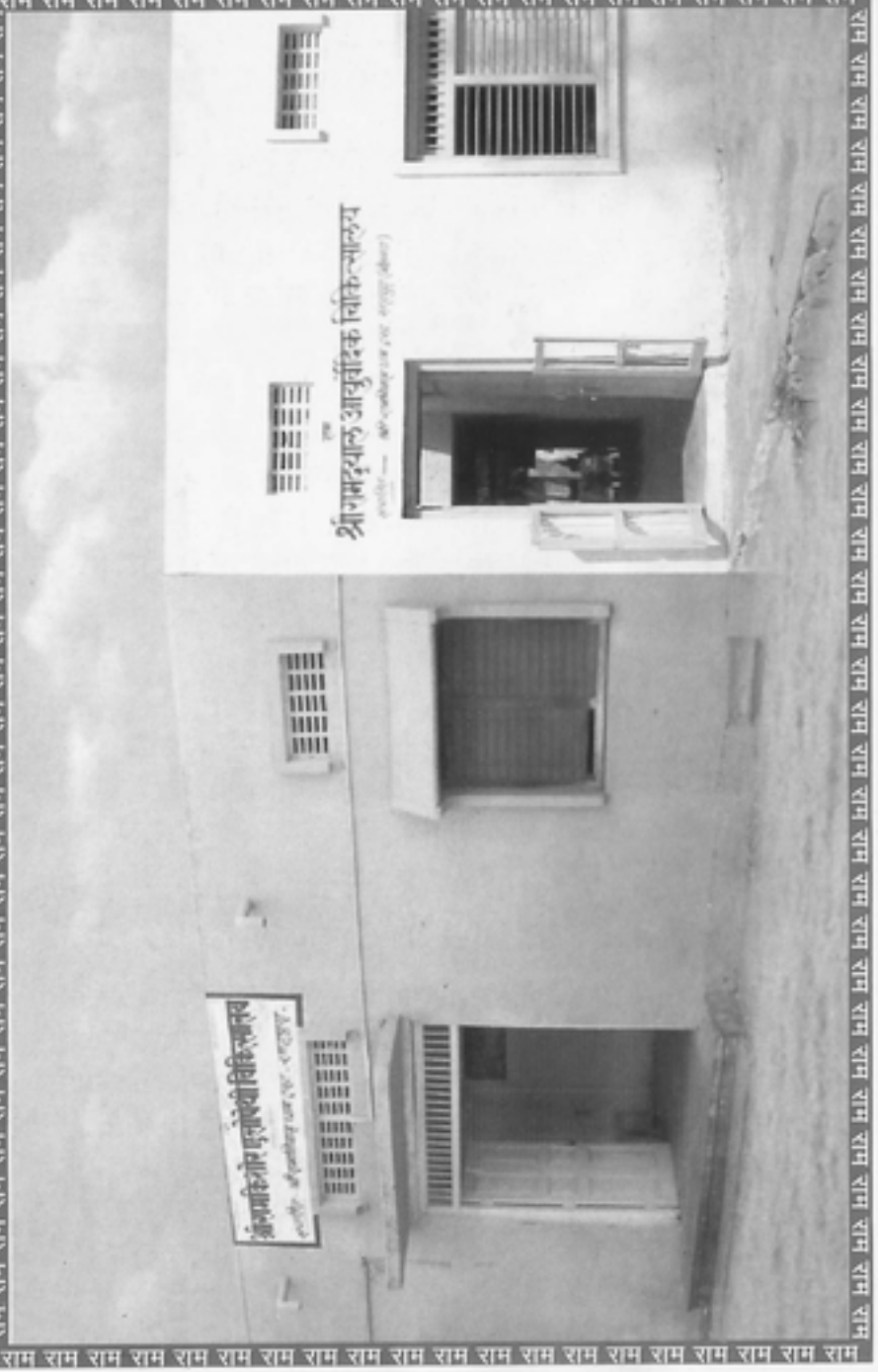

सेवा प्रकल्प

स्वामी श्री रामकिशोर एलोपैथी चिकित्सालय : रामचरण द्वार के दक्षिण में श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट द्वारा स्वामी श्री रामकिशोर एलोपैथी चिकित्सालय चलाया जाता है। यहाँ पर मरीजों को निःशुल्क दवाईयाँ, मल्हम, पट्टी, इंजेक्शन एवं प्लास्टर आदि किये जाते है।

स्वामी श्री रामदयाल आयुर्वेदिक औषधालय : श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट द्वारा रामचरण द्वार के दक्षिण में स्थित स्वामी श्री रामदयाल आयुर्वेदिक औषधालय है। यहाँ पर प्रतिदिन प्रातः 8 से 12 तक रोगियों को निःशुल्क आयुर्वेदिक दवा का वितरण किया जाता है।

अन्न क्षेत्र: श्री राम निवास धाम शाहपुरा, श्री रामद्वारा पुष्कर एवं रामद्वारा छावनी इन्दौर में अन्न क्षेत्र चलाये जाते है।

प्रकाशन : ब्रह्मलीन आचार्य श्री रामकिशोर जी महाराज के द्वारा सन् 1991 में श्री रामस्नेही भास्कर मासिक पत्रिका का प्रकाशन श्री रामनिवास धाम ट्रस्ट ने प्रारम्भ किया। आत्म चिंतन एवं सदाचार प्रेरक पत्रिका प्रतिमाह प्रकाशित होती है। वर्ष में एक विशेषांक भी फूलडोल महोत्सव पर प्रकाशित किया जाता है। वर्तमान में पत्रिका में 65 संरक्षक एवं 1400 आजीवन सदस्य है। पत्रिका का वार्षिक, आजीवन एवं संरक्षक सदस्यता की राशि क्रमशः 151, 501 एवं 5001 रुपये है। आप प्रबन्धक, रामनिवास धाम ट्रस्ट, शाहपुरा जिला भीलवाड़ा (राज.) के नाम डी.डी. या मनिऑर्डर भेज कर सदस्य बन सकते है।

रामस्नेही चिकित्सालय

एवं अनुसंधान केन्द्र, भीलवाड़ा

जगद्गुरु स्वामीजी श्री रामदयाल जी महाराज ने 1998 के अपने भीलवाड़ा चातुर्मास में रुग्ण मानव की सेवार्थ रामस्नेही चिकित्सालय की आधार शिला रखी। 25 अप्रैल 2000 को आचार्य श्री के कर कमलों से चिकित्सालय का शुभारम्भ हुआ।

शुभारम्भ के समय से ही स्वामीजी श्रीरामचरण जी महाराज की असीम अनुकम्पा एवं आचार्यश्री के अथक प्रयासों से चिकित्सालय का विकास, विस्तार एवं सेवाएं तीव्र गति से बढ़ रही है। अपने अल्पकाल में ही चिकित्सालय में निम्न सुविधाएं, सेवाएं अनुभवी चिकित्सकों की देखरेख में न्यूनतम शुल्क पर प्रदान की जा रही है।

प्रत्येक माह कई निःशुल्क शिविर लगाये जाते है। रक्तदान के कई शिविर लगाये गये है। बाढ़ पीड़ितों के लिये करीब एक लाख रु. की दवाओं का निःशुल्क वितरण किया। फरवरी 05 में डायलिसिस मशीन भी यहां लग गई है। पिछले दो वर्षो से (जन संख्या घनत्व का) राज्य स्तरीय पुरस्कार भी इसी चिकित्सालय को मिलता रहा है।

चिकित्सालय के अपने दो रोगी वाहन (एम्बुलेंस) भी है। अत्याधुनिक ब्लड बैंक, एक्सरे, सोनोग्राफी, सी.टी. स्केन, 2डी कलर डोपलर, एच.टी.वी. मशीन, ईको कार्डियोग्राफी, कम्प्यूटराईज्ड ई.सी.जी., सी.टी.एम.टी. आदि की सुविधाएं है।

आर्थोपेडिक, फिजियोथेरेपी, जनरल मेडिसिन, शिशु विभाग, स्त्री रोग एवं प्रसूति, जनरल दूरबीन एवं शल्य चिकित्सा, दन्त चिकित्सा विभाग, यूरो, न्यूरो, रेडियो एवं पेथोलॉजी विभाग यहाँ 24 घण्टे कार्यरत है।

200 बेड की क्षमता वाले चिकित्सालय में जनरल एवं डीलक्स तथा एयरकंडीशण्ड कॉटेज वार्ड भी है। दवा बैंक, रामशाला एवं जलपान गृह भी है। शरीर की सूक्ष्म जांच हेतु एम.आर.आई. मशीन भी शीघ्र उपलब्ध करवाई जाने वाली है।

रामस्नेही के सिद्धान्त एवं नियम

1. राम नाम की उपासना, ईष्ट के प्रति दृढ़ता।
2. नित्य गुरू दर्शन, रामद्वारा दर्शन एवं प्रणाम परिक्रमा।
3. कण्ठी एवं तिलक धारण करना।
4. शीत प्रसाद (चावल का) लेने के पश्चात् भोजन ग्रहण।
5. जल को छानकर काम में लेना।
6. शिखा रखना।
7. प्राणी मात्र पर दया करना एवं किसी के साथ कटु व्यवहार नहीं करना।
8. चोरी, जुआ एवं व्यसन जैसी कुप्रवृत्तियों से दूर रहना।
9. सन्तों की सेवा करना।
10. रात्रि में भोजन नहीं करना।
11. रामद्वारा के विकास में यथाशक्ति सहयोग।

सम्प्रदाय में दीक्षा

रामस्नेही सम्प्रदाय में दीक्षा दो तरह (संत एवं गृहस्थ) की होती है। दीक्षा में जिज्ञासु गुरु की शरण में जाता है। गुरुदेव उसे राम मंत्र का उपदेश देते है एवं कंठी तथा भजन का नियम दिलाते है। ऐसे जिज्ञासु गृहस्थी में रहकर भजन करते है। यदि जिज्ञासु संत बनना चाहता है तो गुरुदेव उसे संत वेश प्रदान कर नवीन नाम प्रदान करते है।

: श्री रामचरण द्वार:

जोधपुर के लाल पत्थरों से बना भव्य आकर्षक नक्काशी से युक्त श्री रामनिवास धाम का मुख्य प्रवेश द्वार ''श्री रामचरण द्वार'' है।। इसका निर्माण वर्तमान आचार्य श्री स्वामीजी श्री रामदयाल जी महाराज के समय हुआ।

।।श्रीमद् रामचरणाय नमः।। ।।श्रीमद् रामदयालाय नमः।।

हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन

अन्तर्राष्ट्रीय श्री रामस्नेही सम्प्रदाय शाहपुरा

के

फूलडोल महोत्सव-2005

के शुभ अवसर पर

श्री रामदयाल जी महाराज

का

हार्दिक अभिनन्दन

एवं सम्प्रदाय के वंदनीय संतों, रामस्नेही भक्तों, ''श्री रामस्नेही भास्कर'' मासिक पत्रिका के संरक्षक, आजीवन तथा वार्षिक सदस्यों का स्वागत।

:: रामचरणानुरागी ::

रामकिशोर पटवारी (दुब्बी वाले)
निर्मला देवी (धर्मपत्नी स्व. श्री जगदम्बा प्रसाद जी)
विश्वम्भरदयाल, शंकरलाल, ओंमकार, दिनेश, भास्कर, गौरव, विजय एवं विजयवर्गीय परिवार

66, 'विजयवर्गीय निवास'
संतोषनगर कॉलोनी, ब्रह्मपुरी, जयपुर (राजस्थान)
दूरभाष-(0141) 2670098

।।श्रीमद् रामचरणाय नमः।। ।।श्रीमद् दुल्हेरामाय नमः।। ।।श्रीमद् रामदयालाय नमः।।

अन्तर्राष्ट्रीय श्री रामस्नेही सम्प्रदाय शाहपुरा

के

फूलडोल महोत्सव

पर

हार्दिक अभिनन्दन

BALAJI SCRAP TRADERS

Dealers of : S.H. All Textile Machinery Spare Parts,
Ferrous & Non-Ferrous Metal Scrap

622, Madhavpura Ganj Bazar, Near Ambaji Temple,
Shaibagh Road, AHMEDABAD-380004
Ph. : 2159292 (O), 98250-20315 (M)

BALAJI EXPORTS PVT. LTD.

:: रामचरणानुरागी ::

महेश आत्मज मदनलाल जी खटौड़
ए–12, रत्नधारा अपार्टमेंट, गिरधर नगर ब्रिज के पास, शाहीबाग, अहमदाबाद
मोबाइल–098250–20315

राजेश आत्मज मदनलाल जी खटौड़
''दीप ज्योति'' ऐवेन्यू सर्किट हाउस के पीछे, शाहीबाग, अहमदाबाद (गुजरात)
मोबाइल–098253–70796

कैलाशचन्द्र आत्मज मदनलाल जी खटौड़
मोबाइल–098253–08835
एवं बाल गोपाल यश एवं शिखर, कपासन, फोन–(01476) 231514)

।।श्रीमद् रामचरणाय नमः।। ।।श्री सांवरिया सेठ की जय।। ।।श्रीमद् रामदयालाय नमः।।

अन्तर्राष्ट्रीय श्री रामस्नेही सम्प्रदाय

शाहपुरा (भीलवाड़ा) के

वार्षिक फूलडोल महोत्सव–2005

के पावन अवसर पर वंदनीय संतों,
रामस्नेही भक्तों एवं ''श्री रामस्नेही भास्कर''
पत्रिका के संरक्षक व आजीवन सदस्यों का

हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन

एवं

नववर्ष की शुभकामनाएँ

पीड़ित मानव की सेवा कर
अपने जीवन को मंगलमय बनावें।

अपने तन, मन और धन का
उपयोग परोपकारी कार्यों में करें।

आपका

जगदीश अजमेरा (मुंगाना वाला)

श्री शक्ति मेटल कॉर्पोरेशन

पीतलिया बम्बा के पीछे, घी कांटा रोड़, अहमदाबाद (गुजरात)

।।श्रीमद् रामचरणाय नमः।। ।।श्रीमद् रामदयालाय नमः।।

अन्तर्राष्ट्रीय श्री रामस्नेही सम्प्रदाय शाहपुरा

के

।। फूलडोल महोत्सव-2005 ।।

के शुभावसर पर

हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन

नववर्ष आपको निरोगी, स्वस्थ एवं दीर्घायु बनायें।
हम सब लोक कल्याण के कार्यो को भक्ति
मानकर उनमें लगे रहें।

शुभेच्छु :- रामस्वरूप, गिरिराज, रामप्रसाद, जुगलकिशोर, दीपक,
राकेश, मुकेश एवं समस्त कोठारी परिवार (गंगापुर)
अहमदाबाद (गुजरात)
फोन-2200641 (ऑ.) 2867136 (नि.), 9898161461 (मो.)

GIRIRAJ METAL CASTING

:: MANUFACTURERS & DEALER IN ::

All Type of Matal Casting, Submersible Pump & Parts
Spl. of G.M. & L.B. Bushes, Impellers & Bearing Sets

**121, Amar Industrial Estate, Opp. Forge & BLowre,
Naroda Road, Ahmedabad (Guj.) 380025**

KOTHARI SUBMERSIBLE PRODUCT

*Manufacturer of Submersible Pump. Spare
Specialist in Bush, Impellers & Thurst Bearing Set*

।।श्रीमद् रामचरणाय नमः।। ।।श्रीमद् रामकिशोराय नमः।।
।।श्रीमद् मुरलीरामाय नमः।। ।।श्रीमद् रामदयालाय नमः।।

अन्तर्राष्ट्रीय श्री रामस्नेही सम्प्रदाय

श्री रामचरणाचार्य पीठ शाहपुरा (भीलवाड़ा) के वंदनीय पीठाधीश

जगद्गुरु स्वामीजी श्री १००८ श्री रामदयाल जी महाराज

एवं

समस्त पूज्य रामस्नेही संत वृन्दों के पावन चरणों में
शत्-शत् नमन्

।। फूलडोल महोत्सव-2005 पर आपका हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन ।।

-: रामचरणानुरागी :-

जगदीशचन्द्र-गंगादेवी दिलीप कुमार-आभा
संदीप कुमार-अनुराधा प्रदीप कुमार-सुषमा
नुपुर, देव, नताशा, आर्यम् एवं समस्त सोडाणी परिवार
हुरड़ा जिला भीलवाड़ा (राजस्थान)

अनुपम ग्रेनाईट्स प्रा.लि. आबूरोड़

रीयल मार्केटिंग, अहमदाबाद

रॉ कोपको लिमि. तिरुपति (आंध्र प्रदेश)

मरक्यूरी ग्रेनाईट्स प्रा.लि., टाडा (चैन्नई)

।।श्रीमद् रामचरणाय नमः।। ।।श्रीमद् दुल्हेरामाय नमः।। ।।श्रीमद् रामदयालाय नमः।।

अन्तर्राष्ट्रीय श्री रामस्नेही सम्प्रदाय

शाहपुरा (भीलवाड़ा) के

वार्षिक फूलडोल महोत्सव-2005

के शुभ अवसर पर
सम्प्रदाय के वंदनीय संतों, रामस्नेही भक्तों एवं
''श्री रामस्नेही भास्कर'' पत्रिका के सदस्यों का

हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन
साथ ही
नववर्ष की मंगल कामना

नववर्ष सबके जीवन को उत्कृष्टता, सत्वृत्तियों एवं सत्चिंतन से परिपूर्ण करें। हम सब राम नाम का स्मरण करते हुए पूर्णता की ओर अग्रसर हों, ऐसी हार्दिक कामना।

आपके अपने ही ....

रामप्रसाद-राधा देवी, रामसहाय-लीला देवी,
श्यामसुन्दर-ललिता, रामपाल-अलका, रामलाल-रेखा
एवं कमलेश, दीनबंधु, पवन, अंकित, सुशीला, आरती,
गरिमा सौमानी, कपासन जिला चित्तौड़गढ़

※ रामविलास जीतमल सौमानी
※ रामा स्टोर
※ रामा मेडिकल स्टोर

दूरभाष : (01476) 230329, 230829, 230359, 230524, 230242

।।श्रीमद् रामचरणाय नमः।। ।।श्रीमद् दुल्हेरामाय नमः।। ।।श्रीमद् रामदयालाय नमः।।

अन्तर्राष्ट्रीय श्री रामस्नेही सम्प्रदाय

शाहपुरा (भीलवाड़ा) के

वार्षिक फूलडोल महोत्सव-2005

के शुभ अवसर पर संत महानुभावों, रामस्नेही भक्तों
एवं ''श्री रामस्नेही भास्कर''
मासिक पत्रिका के सदस्यों का

हार्दिक स्वागत एवं अभिनन्दन

नववर्ष आपके लिये शुभ एवं मंगलकारी हो!

सोमानी टी सेन्टर

(श्रीराम मार्केट)

गणेशलाल सौमानी, बलराम सौमानी,
ओमप्रकाश सौमानी एवं निलेश सौमानी

सौमानी मोहल्ला, कपासन जिला चित्तौड़गढ़ (राज.)

दूरभाष : (01476) 230791 (नि.) 231254 (ऑ.)

24 229

रामस्नेही चिकित्सालय

एवं अनुसंधान केन्द्र

स्वामी रामचरण मार्ग, भीलवाड़ा (राजस्थान) फोन-234100, 238640

भीलवाड़ा का सबसे बड़ा एवं सभी सुविधाओं युक्त चिकित्सालय

66,000 वर्ग फुट पर बना, 250 शैय्याओं की सुविधा युक्त

सीटी स्केन सेन्टर, लेप्रोस्कॉपी (दूरबीन) ऑपरेशन सुविधा

चिकित्सालय में निम्नांकित विभाग 24 घण्टे कार्यरत

ऑर्थोपेडिक विभाग
गेस्ट्रोस्कोपी
स्त्री व प्रसव विभाग
लेप्रोस्कोपी
जनरल सर्जरी
एण्डोयूरोलॉजी
मेडिसिन विभाग
रेडियोलोजी
डायलिसिस
शिशु विभाग
ब्लड बैंक

सिस्टोस्कोपी एवं थेरेटरोस्कोपी

स्वचालित जल मंदिर

यात्री विश्राम गृह, अल्पाहार एवं भोजनालय